सन

१८८५ से १९१७

ईसवी

❋ तक का ❋

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम

श्री उमेश बनर्जी, मिस्टर ह्यूम,

दादा भाई नौरोजी, सर विलियम वेडर वर्न,

फिरोज शाह मेहता, लाला मोहन घोष,

माननीय गोपाल कृष्ण गोखले,

पं० मदन मोहन मालवी, भगवान लोकमान्य तिलक,

एवं श्रीमती एनीबिसेन्ट

आदि का

✲ बलिदानी संग्राम ✲

— : तथा : —

महात्मा गान्धी द्वारा

✲ समर नीति में क्रान्तिकारी परिवर्तन मय ✲

जन संघर्ष

तथा उसकी सफलता



पुस्तक मिलने का पता :—
स्वतन्त्रता संग्राम साहित्य सदन,
लालदरवाजा, गाजीपुर।

मूल्य २) दो रुपया

प्रकाशन तिथि :—
दो अक्टूबर सन् १९५७ ई०

भारतीय

स्वतन्त्रता-संग्राम

आदि-काल

सूर्य्यनारायण पाण्डेय "अज्ञ"

स्वतन्त्रता दिवस] [सन् १९५७

प्रकाशक :—
स्वतन्त्रता-संग्राम प्रकाशन विभाग
पचायत प्रेस, गाजीपुर।

प्रथम पुष्प
प्रथम बार १९५७

मुद्रक :—
पंचायत प्रेस, लालदरवाजा
गाजीपुर।

उन अगणित शहीदों को :—

जिन्हों ने निज बलिदान द्वारा राष्ट्रीय नींव में
कंकरियों का कार्य्य किया तथा
अदृश्य रहने मे ही अपना
गौरव समझा।

समर्पण

—:❀:—

यह समर्पित है हे वीर वर !
तेरी निर्मल कहानी तुझे ।
यदि हो लेखनी से भूल भी,
न देना भूल उलहना मुझे ॥

"अज्ञ" अज्ञान ही जब नाम है,
भूल क्यों न बन्धु अनिवार्य हो ।
अकथ विस्तृत तेरी कहानी,
फिर परिपूर्ण कैसे काव्य हो ॥

जब दोष युक्त यह अपूर्ण है,
तो क्यों आदर्श उपहार हो ।
किन्तु सत्यप्रेम परिपूर्ण है,
तो क्यों न मित्र ! स्वीकार हो ।

—आप का अनुज

कवि की ओर से



बन्धुवृन्द,

स्वतन्त्रता-संग्राम की स्मृति जनित अनुभूतियां सहसा साकार हो उठीं, मन की कल्पना लेखनी के प्रवाह में गति पाने लगी, उसे ही आज इस (**स्वतन्त्रता-संग्राम**) के रूप में आप की सेवा में उपस्थित कर रहा हूँ । अपने भौतिक जीवन के इस अंतिम भाग को हमने इस पवित्र कार्य्य के लिये समर्पण कर दिया है, यद्यपि इस *देव-संग्राम* की गुरुता अंकित करना निज शक्ति के परे है, तथापि स्वतन्त्रता सग्राम के एक सैनिक के नाते मुझे अटूट विश्वास , अदम्य उत्साह तथा निरंतर लगन है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार श्री **उमेश बनर्जी** की टोली को स्वराज्य पाने की कल्पना कठिन थी किन्तु निरंतर प्रयास से यह असम्भव कल्पना भी आज साकार हो गई ।

बस इसी विश्वास के अनुसार इस महा काव्य की पद्य रचना की ४०००० चालीस हजार पंक्तियों को दश खण्डो में आप की सेवा में उपस्थित करने का निश्चय किया हूं ।

यह प्रथम खण्ड यानी आदि काल आप बन्धुओं के कर कमलो में समर्पित कर शेष नव खंड को भी उपस्थित करने के लिये प्रयत्नशील हूँ । सम्भव सहयोग के लिये आप से सविनय निवेदन है।

आप का सेवक :—

सूर्य्यनारायण पाण्डेय 'अज्ञ'

स्वतन्त्रता-संग्राम का

एक सैनिक

झण्डा अभिवादन

(१)

युग युग का है मान हमारा,
तिरंगा प्यारा राष्ट्र निशान।
प्रतिबिम्बित बलिदान हमारा,
अंकित राष्ट्र इतिहास महान॥

(२)

यही रण आजादी की शान,
हृदय का यह मेरा अरमान।
जन जीवन राष्ट्र का यह प्रान,
तन मन धन इसे है कुर्बान॥
युग युग का है मान हमारा,
तिरंगा - प्यारा राष्ट्र निशान॥

(३)

कभी न पाये जगत अपमान,
जाये भले ही मेरी जान।
जगतल छाया मे हम इसके,
बढ़ते चलें करते बलिदान॥
युग युग का है मान हमारा,
तिरंगा प्यारा राष्ट्र निशान॥

(४)

गुण गौरव जग गाये इसका,
निरंतर हम भारत संतान।
रवि शशि यह भूतल हो जबतक,
नेक न झुके इसकी कुछ आन॥
युग युग का है मान हमारा,
तिरंगा प्यारा राष्ट्र निशान॥

(५)

सत्य अहिन्सा लेकर आया,
मानवता का प्रतीक महान्।
प्रेम बन्धुत्व देता शिक्षा,
जीवन जगत का सच्चा ज्ञान।
युग युग का है मान हमारा,
तिरंगा प्यारा राष्ट्र निशान॥

(६)

यही रही अभिलाषा मेरी,
नित गाये राष्ट्र गौरव गान।
मानवता की यही हुंकार,
नित बढ़े भारत राष्ट्र निशान॥
युग युग का है मान हमारा,
तिरंगा प्यारा राष्ट्र निशान॥

(७)

मानव हृदय करता जयकार,
गौरव जीवन हमारी जान।
कोटि कोटि मेरा नमस्कार,
चमके यह हिन्द राष्ट्र निशान॥
युग युग का है मान हमारा,
तिरंगा प्यारा राष्ट्र निशान॥

(८)

लो मेरे हिन्द राष्ट्र निशान,
मेरा प्रणाम, मेरा प्रणाम।
जीवन प्रतीक राष्ट्र उत्थान,
मेरा प्रणाम, मेरा प्रणाम।
युग युग का मान हमारा,
तिरंगा प्यारा राष्ट्र निशान॥

—०:०:—

❀ प्रथम सर्ग ❀

स्वतन्त्रता संग्राम

❀ के ❀

—: सैनिकों का अभिनन्दन :-

(१)

जन मन नायक भाग्य विधाता ।
स्वतन्त्रता के जीवन दाता ॥
मानवता के अभय पुजारी ।
रिपुसूदन विजयी रणकारी ॥

(२)

चतुरस्मुखी यह प्रतिभा तेरी ।
गाती भारत वाणी मेरी ॥
सुन लो कण कण बोल रहे हैं ।
लख लख तन मन झूम रहे है ।

(३)

तेरी महिमा अकथ कहानी ।
कह न सकेगी मेरी बानी ॥
अविचल गौरव धारा तेरी ।
अमर कीर्ति यह वीर तुम्हारी ॥

(४)

नित सुखद बन गान महान् ,
प्रतिबिम्बित है तेरा बलिदान ।
हे बीर भारत के अरमान ,
तन मन धन तुझे है कुर्बान ॥

(५)

लिखने चली अब यह लेखनी ।
स्वतन्त्रता की अपनी कहानी ॥
न शक्ति है न बुद्धि विद्या है ।
पुनः क्यों अपना भरोसा है ॥

(६)

साहस था मिला संग्राम में ।
साथी तुम्हारे उस साथ में ॥
रग रग है उसी का संचार ।
मित्र ! तेरा ही यह उपहार ॥

(७)

बस है न कुछ अवशेष मेरा ।
आलोकित पौरुष बल तेरा ॥
दे दो मित्र ! अब यह बरदान ।
लिखे लेखनी तेरा वलिदान ॥

—o—

❀ द्वितीय सर्ग ❀

❀ स्वतन्त्रता संग्राम ❀

की पृष्टि भूमि

--❀❀❀--

(१)

स्वतन्त्रता प्रकृति-प्रदत्त मानव का सहज अधिकार ।
पर तन्त्रता का बन्धन कब किसको होता स्वीकार ॥
करता संघर्ष नित दे दे कर निज पावन बलिदान ।
स्वर्णाङ्कित भारत का वह अपना इतिहास महान ॥

(२)

देख हमारा वैभव विशाल, पड़ोस ललचाता था ।
कर शक्ति संचय दानव बन धोखे धोखे आता था ॥
कभी न चलती उसकी चालें मुँह की वह खाता था ।
शत्रु पराजित चुपके चुपके हट जाता था ॥

(३)

भाई भाई का नाता तब अपना बन जाता था।
शत्रु मित्र बन जाता अन्तर न कभी लख पाता था॥
भारत के वक्षस्थल पर संघर्ष निरंतर होता था।
आक्रमण होता किन्तु भारत न आक्रमण करता था॥

(४)

राम, कृष्ण, बुद्ध के देश का बना दर्शन निराला।
ब्रह्मांड बीच विश्व बन्धुत्व का सिद्धान्त अकेला॥
पाप समझा बल प्रयोग द्वारा तिनका छीन लेना।
श्रेष्ट समझा बन भिखारी सोना भी लुटा देना॥

५)

सत्य प्रेम सहयोग से थे प्रवासी सत्कार पाते।
भाई बन आये बृटिश वासी व्योपार नाते॥
कुछ लेन देन का समझा पवित्र विश्व व्योहार होगा।
राष्ट्र कुछ पा सकेगा दूसरों का उपकार होगा।

(६)

अतिथि बन के प्रवेश पाये, सम्राट बन के छाये।
कभी न देश को अपना समझ, इसे अपना बनायें॥
लूट घर भरने लगे, निज स्वार्थ की डफली बजाये।
स्वार्थ के अवतार थे, कपटी वेष अपना बनाये॥

(७)

आये थे प्रवासी अनेकों ।
कहाँ याद आया किसी को ।।
त्याग देश नया देश पायें ।
स्वदेश अपना इसे बनायें ।।

(८)

इन्हे अपना बृटेन याद आया ।
अपना देश कहते न भाया ।।
लुटने लगा यह देश प्यारा ।
भरने लगा घर बृटिश सारा ।।

(९)

चलने लगी जन मन तरंगें,
प्रतिकार मय प्रतिशोध की ।
दूर चलो, ऐ ! बाहर वाले,
ललकार पड़ी देश हिन्द की ।।

(१०)

जड़ चेतन कण कण कहता था,
रह न सकेगा राज्य विदेशी ।
देश हमारा भाग्य विधायक,
हम सब भाई भारत वासी ।।

(११)

फहरेगा क्यों यूनियन जैक,
यह दिल्ली किला हमारा है।
राष्ट्र ध्वज प्यारा राष्ट्र निशान,
युग युग का मान हमारा है।

(१२)

बन जाये असमसान स्वदेश,
हो जावें सभी हम बलिदान।
कदापि न होगा अब स्वीकार।
देश बन्धन का यह अपमान॥

(१३)

रह न सकेगा यह उपनवेश,
शोषक घातक नीति तुम्हारी।
विजय पराजय का प्रश्न नहीं,
मानवता ललकार हमारी॥

(१४)

धर्म नीति हो तुम भूल गये,
स्वार्थ के बने अन्ध पुजारी।
चट टूट गई तेरी मेरी,
माई : बन्दी अपनी सारी॥

(१५)

तीखे तीखे तेरे अस्त्रों,

शस्त्रों की है परवाह नहीं।

शक्ति ध्वंस मयी प्रलय कारी,

सैन्य बल संचित तेरी कहीं॥

(१६)

कर लेगी बल मे नष्ट हमे,

यह जो तुमको नाज हुआ।

समझो समझो तुम निश्चय अब,

नैतिक तेरा यह ह्रास हुआ॥

(१७)

यह तो कह दो, मानव युग में,

पशु बल की कब जय कार हुई।

युग युग का है इतिहास लिखा,

नै ति क ता की कब हार हुई॥

(१८)

पशुता का यह ध्वजा पताका,

आ स्थिर कब जग मे उड़ पाया।

हुई पराजय हर युग युग में,

जब जब यह कुछ उठ पाया॥

(१६)

नैतिकता का यह मानव बल,
राष्ट्र धर्म अविचल है मेरा।
चम चम चमक चलेगा तेगा,
लह लह हाथ चलेगा तेरा।।

(२०)

डिग न सकेंगे नेक कभी,
कट कट के सिर गिर जावेंगे।
हार तुम्हारी निश्चय होगी,
मर मर कर भी कह जावेंगे।।

(२१)

कभी न तुम छीन सकोगे,
आ जा दी है अपनी प्यारी।
आत्म शक्ति का गौरव इसको,
भारत की है नगरी न्यारी।।

(२२)

इसने सीखा मर मर जाना,
मरने की यह अमर कहानी।
मरने जाने का भेद नहीं,
सुना इसने कृष्ण की बानी।।

(२३)

पढ़ पढ़ के यह अपना गीता,
सहज अमोघ अस्त्र है सीखा।
बोलो कैसे जीत सकोगे,
शस्त्र रहा यह किसका तीखा ॥

(२४)

वसुधा के इस क्रीड़ा स्थल में,
चलता प्रति दिन द्वन्द अनोखा।
सत्य सहयोग प्रेम अहिन्सा,
न्याय अस्त्र यह कैसा चोखा ॥

(२५)

भारत की यह गौरव गरिमा,
राष्ट्र धर्म यह अपना प्यारा।
कभी न द्वेष मयी कुछ बातें,
सीखा जग है भाई सारा ॥

(२६)

खनकती चमकती तलवारें,
लेकर देश गये न किसी के।
युग युग घर घर उपहार दिये,
मित्र विश्व संदेश सभी के ॥

(२७)

भेद नीति के हो पंडित तुम,
समझ न पाये तेरी चालें।
भाई भाई द्वन्द कराये,
खींच लिये तुम मेरी खालें।

(२८)

सम्प्रदाय वादी भेद बना,
करते उल्लू सीधा अपना।
जन जीवन कर देते दुर्लभ,
सुख बैभव हो जाता सपना।।

(२९)

फिर कैसे कहते हो हमसे,
कुछ भी तेरा सहयोग करें।
तुमने तो यह सीखा है,
नीति वही जैसे धाम भरे।।



✲ तृतीय ललकार ✲

कांग्रेस का जन्म

स्वतन्त्रता संग्राम का सैन्य संगठन

—✲❀✲❀✲—

(१)

मिली पराजय जब थी,
सनतावन के प्रतिकारो मे।
जीत चुके थे शासक मेरे,
चतुर चलाँकी इन चालों में॥

(२)

मुझे पराजय कह कह जाती,
विजय न है इन संग्रामों में।
बिखर जाती यह शक्ति मेरी,
इतर उतर टोली टोली में॥

(३)

मिलन न होता कोने कोने,
तोड़ न पाते जंजीरों को ।।
जागरूक हुई राष्ट्रीयता,
अब छोड़ गुरीला वारों को ।

(४)

विफल बनते प्रयत्न हमारे,
रुक जाती मेरी तब गति थी ।
उलझी रहती उलझन मेरी,
बनती विभोर मेरी मति थी ।।

(५)

पग की डोरी काटे जाते,
गले गले डोरी पाते थे ।
पा लेंगे आजादी अपनी,
हँस हँस सैनिक कह जाते थे ।।

(६)

अपनी बलिदानी वेदी पर,
नित कट कट हम मर जाते थे ।
कुछ भी करते पासा उनका,
सीधा पथ विजय न पाते थे ।।

(७)

ऐसी थी प्रतिकूल अवस्था,
विकट राष्ट्र व्यापी संकट में।
था सन् अठारह सौ पचासी,
दिसम्बर अठाइस पूना मे॥

(८)

था निश्चय होना अधिवेशन,
प्रथम राज नैतिक मडल का।
परिस्थितियों के कुछ चक्कर से,
स्थान मिला फिर वह बम्बे मे॥

(९)

मिस्टर ह्यूम बने संयोजक,
सतरह आयोजक थे पक्के।
सेवक मानवता के सच्चे,
छूट गये शासक के छक्के॥

(१०)

प्रथम कल्पना यह जिनकी थी,
हिन्द प्रेम उनका पावन था।
रंग भेद न था कुछ हृदय में,
पूज्यवर! वह महा मानव था॥

(११)

राष्ट्र कल्पना साकार बनी,
श्रेष्ट ह्यूम का प्रस्ताव हुआ।
उमेश बनर्जी थे सभापति,
हिन्द काँग्रेस का जन्म हुआ॥

(१२)

यह सेना थी आजादी की,
आजादी लेना ठानी थी।
देश काल धर्म का था ज्ञान,
देश जगाना यह सीखी थी॥

(१३)

कैसे कुछ भी बढ़ पायेगी,
आज यहाँ क्या कह पायेगी।
यह सब उसने सोचा समझा,
आज कहाँ किस पथ जावेगी।

(१४)

देवत्व पशुत्व का सग्राम,
हिन्द बीच यों आरम्भ हुआ।
तीव्र प्रबल कारी शस्त्रों का,
अध्यात्मिक यह प्रतिकार हुआ॥

(१५)

हर अन्याय का खुला विरोध,
श्रद्धा विश्वास करने लगा।
शक्ति का संघर्ष इस रण में,
अध्यात्म बल से होने लगा॥

(१६)

अत्याचार से युद्ध महान,
कष्ट सहिष्णुता चलने लगा।
हर स्वार्थ मय अनुचित कार्य का,
उचित प्रत्युत्तर मिलने लगा॥

(१७)

अक्षम्य क्रोध के तुमुल रण में,
अनुनय विनय अब होने लगा।
तलवार गोली के सामने,
सत्याग्रही दल आने लगा॥

(१८)

उमेश बनर्जी की यह टोली।
झूम पथ दर्शित चलने लगी।
सबल सहायक मानवता की,
यह मिलन टोली टोली लगी॥

(१६)

सम्पादक आये पत्रों के,
प्रति विम्बित मुकुरित इनमे।
भारत की अस्मियता अपनी,
बढ़ता दल यह था छन छन मे॥

(२०)

'नव विभाकर' यह 'ज्ञान प्रकाश',
नसीम, हिन्दू, इन्डियन मिरर।
हिन्दू प्रकाश, हिन्दूस्तानी,
मराठा, केसरी, स्पेक्टेटर॥

(२१)

क्रेसेन्ट, ट्रिव्यून, भारत पत्र,
इन्डियन यूनियन आये थे।
जो गीत मधुर सहज स्वाभाविक,
इस आजादी के गये थे॥

(२२)

माननीय दीवान बहादुर,
रघुनाथ राव थे मद्रासी।
लाला बैजनाथ वर लेखक,
विद्वान आगरा के वासी।

(२३)

महादेव गोविन्द रनाडे,
कौंशिल सदस्य मानव सेवक।
सुन्दर रमण पूज्य राम कृष्ण,
गोपाल भंडारकर नायक॥

(२४)

श्री वामन सदा शिव आपटे,
वीर गोपाल गणेश पूना।
दादा भाई नौरोजी,
काशी नाथ तैलंगाना॥

(२५)

फिरोज शाह मेहता बाम्बे,
श्रेष्ट कारपरेशन नेता।
वीर गंगा प्रसाद लखनऊ,
वीर नरेन्द्र सेन कलकत्ता॥

(२६)

पूज्य दीनशा एदल वाचा,
बन्धु बहराम मालाबारी।
वीर वर! पी० आनन्द चार्लू,
केशव पिल्ले अनन्तपुरी॥

(२७)

एस० वीर श्री राघवा चार्य,
जी० सुब्रह्मण्य ऐयर भाई।
हृदय विशाल पूज्य भारत के,
सभापति श्री महाजन भाई॥

(२८)

श्री पी० रंगैया नायडू -
नारायण गणेश चन्दा वरकर।
थे भारत के सैनिक शामिल,
महान एस० सुब्रह्मण्य ऐयर॥

(२९)

प्रथम राष्ट्र निर्माता नेता,
जिन्होंने राष्ट्रीय नींव दिया।
बन गया विशाल महल जिनपर,
उन कंकरियों का कार्य्य किया॥

(३०)

महा मानव पूर्वज मेरे,
वन्दनीय भारत युग युग के।
यह स्वतन्त्रता है आज मिली,
जो फल उनके बलिदानों के॥

✲ चतुर्थ ललकार ✲

विनय-काल

—✲✲✲✲✲—

(१)

चमक रहा सितारा गगन में,
प्रभु सत्ता सम्राज्य ब्रिटेन का।
आश्चर्य चकित भूतल सारा,
मान लिया था लोहा जिसका॥

(२)

छत्र छाया में उस प्रतिभा के,
सिकचों में भारत पलता था।
बन्दी बनके वज्र परिधि में,
समय की प्रतिक्षा करता था॥

(३)

किन्चित भी सर ऊँचा करता,
दमन चक्र चल जाता था।
भारत के प्रयत्न-बल सारे,
सहज विफल पल में होता था॥

(४)

उस साम्राज्य बृहत सीमा में,
सूर्य्य अस्त न कभी हो पाता था।
जिसके जल थल नभ का सैनिक,
विश्व विजय डंका देता था॥

(५)

सबल राजनैतिक चालो में,
यह जग सारा फँस जाता था।
प्रभु सम्राट तुम्हारी जय हो,
बन रहा जगत का नारा था॥

(६)

भारत वासी सम्राट प्रजा,
नम्र निवेदन हम करते हैं।
हो समता व्यवहार प्रजा जन मे,
विनय पत्रिका यह लाये हैं॥

(७)

भेद न हो प्रभुवर शासन मे,
वर माग यही हम करते है।
मिले नौकरियाँ हमको भी,
जो पद ब्रिटेन वासी पाते हैं॥

(८)

महा रानी विक्टोरिया की,
हुई घोषणा जग आकर्षक।
रहे न कागज के पन्नो मे,
यह विनय है मेरी भरसक॥

(९)

हाथी दाँत दिखाने खाने,
के दो भेद न आवे बन के।
हम सब मानव भाई भाई,
यह भाव हमारे मन के॥

(१०)

रहे देश भेद न हम मे,
विश्व प्रेम पावन है मेरा।
हो जावे स्वीकार निवेदन,
यही कसौटी शासक तेरा॥

(११)

प्रस्ताव यहाँ आज हमारा,
प्रजा बनेंगे आज्ञा कारी।
विद्रोह न करेगा यह भारत,
मान्य रहीं आज्ञा सरकारी।

(१२)

काँग्रेस का यह शैशव काल,
जिसने यह प्रस्ताव किया।
वैध होगी माँग हमारी,
राष्ट्रीयता मूर्तिमान किया॥

(१३)

मिलने का यह मंच बना,
जन प्रेमी निज नेताओं के।
विचार विनमय अवकाश मिला,
भारत के कोने कोने के॥

(१४)

हिन्दू, मुसलिम जैन यहूदी,
पारसी, इसाई भारत के।
गुजराती, द्रवीण मराहठा,
प्रवीण साथी महाराष्ट्र के॥



अवधी भाई यह बंगाली,
मध्य भारती वीर बिहारी।
पूरब पश्चिम दक्षिण वासी,
उत्तर के भाई कशमीरी॥

(१६)

हिन्द सिपाही वीर गोरखा,
सिन्धी राथी वह पंजाबी।
भारत वासी जन मन करते,
प्रिय सुन्दर नमस्कार जवाबी॥

(१७)

प्रति वर्ष यह काँग्रेस अपनी,
हिल मिल साहस से करते थे।
अपनी वही विनय पुरानी,
नूतन कर वे नित गाते थे॥

(१८)

वैध उपायों से हम आये,
हित करने अपने भारत का।
हम देश भक्त, हम राज्य भक्त,
सेवक हम इस मानव युग का॥

(१९)

हम विद्रोह नहीं करने का,
अब निश्चय करने है आये।
किन्तु न हो कुछ आर्थिक शोषण,
बात हृदय की यह कहने आये ॥

(२०)

बन्द न हो व्योपार हमारा,
उद्योग का नित्य विकास हो।
बढ़ जावे अब बन्धुत्व यहाँ,
सहयोग का नव संचार हो ॥

(२१)

हमें बन्दी पंगु मूर्ख बना,
कच्चे माल न जावे बाहर।
समृद्ध शाली अपना देश,
क्यों बन जावे नग्न खण्डहर ॥

(२२)

शानी न रखता किसी दिन,
वस्त्र व्यवसाय का इस जग मे।
मर रहे हमारे क्यों बुनकर,
क्या कंटक आया इस मग में ॥

(२३)

नष्ट हुये क्यों घर के धन्धे,
फिरते बाहर मारे मारे।
लाचारी यह पेट न भरता,
बेकार बने हारे हारे॥

(२४)

देख हमें जग ललचाता था,
अब उलटे हम ललचाते हैं।
रहे नहीं व्योपार हमारे,
प्रति दिन कंगाली पाते है।

(२५)

राज्य गया वह उद्योग गया,
व्योपार गया सारा मदा।
शासक है न्यायाधीश बना,
पड़ गया गले रस्सी फंदा॥

(२६)

न्याय विभाग अलग हो जावे,
न्याय मार्ग है यह प्रभु सच्चा।
गलत शिकारी बनता शासक,
कहाँ बताऊँ चिट्ठा कच्चा॥

(२७)

सिविलसरविस की परीक्षायें,
साथ चलें ब्रिटेन भारत मे।
हार्दिक इच्छा यही हमारी,
हो प्रवेश सैनिक शिक्षा में॥

(२८)

बन्द बाजार अब हो जावे,
दूषित नशीली वस्तुओं की।
व्योपार न हो जग मानव की,
सहज स्मृति विस्मृति करने की॥

(२९)

चरित्र बल, पवित्र मानव बल,
मिले न प्रश्रय यहाँ पशुता को।
युग युग का यह धार्मिक भारत,
हो न चुनौती नैतिकता को॥

(३०)

सर्व श्रेष्ट सतित्व है मेरा,
अपहरण न हो अब पशु बल से।
विनिष्ट कर दी जावे पल में,
वैश्या वृति इस सैनिक दल से॥

(३१)

दूषित यह अभिशाप तुम्हारा,
होगा कैसे हमें स्वीकार।
यही निवेदन है अब मेरा,
हो जावे इसका सहज प्रतिकार॥

(३२)

विकल कंगाली से पिड़ित,
रोदन करता भूखा भूखा।
किञ्चित ध्यान न होता तेरा,
उत्तर पाता सूखा सूखा॥

(३३)

आर्थिक ढाचा अब टूट चुका,
नमक कर न हो मेरे ऊपर।
मिली न मुझको सूखी रोटी,
नमक कहाँ से आवे घर पर॥

(३४)

दूषित है यह बीज विषैला,
प्रतिनिधित्व सम्प्रदायिकता।
हो जाती यह छिन्न भिन्न मेरी,
भगं खण्ड खण्ड राष्ट्रीयता॥

(३५)

प्रथा पृथक यह निर्वाचन की,
सह जग्रगति में गति रोध किया।
बाँट मिला अब हिन्दू मुसलिम,
जिसने हमको गृह द्वन्द दिया ॥

(३६)

हिन्दू मुसलिम भाई भाई।
आज मुझे क्यों एतराज हुआ,
घातक प्रभुवर यह नीति तुम्हारी।
घर जिससे मेरा ध्वसं हुआ ॥

(३७)

हम जान रहे, हम मान रहे,
सहज नीति पार्लियामेन्ट की।
हित कर जग बीच उदार अधिक,
सर्व श्रेष्ट यह मानव युग की ॥

(३८)

निश्चित विश्वास हमारा,
होगा विकास इससे मेरा।
द्वेष नहीं है इससे हमसे,
शोषक नौकर शाही तेरा ॥

(३९)

विधान ब्रिटेन श्रेष्ट तुम्हारा,
वोफादार हम है हृदय से।
करने का संघर्ष निरंतर,
ठाना नौकर शाही दल से॥

(४०)

आज राय अब यही हमारी,
ताज रहे ब्रिटेन सरकारी।
उपनवेश बाद रहे सुधार,
स्वशासन सहज विनय हमारी॥



✤ पंचम ललकार ✤

दमन तथा सुधार काल

—✤❀✤❀✤—

(१)

दमन सुधारों का यह मिश्रण,
हिन्द में अंग्रेजी सम्राज।
दीर्घकाल अतीत की लम्बी,
लिख दिया बृटिश कहानी ताज॥

(२)

ज्यों ज्यों जाग्रित आनें लगी,
देश जागरूक होने लगा।
नित राष्ट्रीयता बढ़ने लगी,
नव शक्ति बल फिर आनें लगा॥

(३)

अपने स्वार्थों की रक्षा मे,
शासन सशंकित होने लगा।
देश भक्ति, राज भक्ति अंतर,
निरन्तर भारत पाने लगा ।।

(४)

अभि उदय का नवजात अंकुर,
नव पल्लवित अब होने लगा।
शैशव का शिशु 'हिन्द कांग्रेस,
अवस्था किशोर पाने लगा ।।

(५)

चिन्तित चकित था प्रतिद्वन्दी,
अरुणोदय के नव प्रकाश में।
प्रति पल चढ़ रहा था सितारा,
गति बिधि से सहज आकाश में ।।

(६)

दे रहा था ऋतु राज बसंत,
सुरभि-सौरभ पुष्प सुगंध का।
पुस्पवित मस्त आशा बेली,
दे रही संदेश विकास का ।।

(७)

अरुणोदय की सुनहली छटा,
प्राची में थी अब चमक रही।
अविलम्ब आज कोने कोने,
प्रकाश अपना थी लुटा रही॥

(८)

तिव्र गति मे, सहसा भूतल से,
घोर निशातम सहज टलरहा।
विहंग कलरव नव प्रभात में,
तान संगीत था सुना रहा॥

(९)

जागरण के इस नव काल में,
कदम कदम था हिन्द चल रहा।
यद्यपि वह दूर था अति अधिक,
तथापि लक्ष्य लक्षित हो रहा॥

(१०)

बढ़ रही थी यह टोली इधर,
आजादी के दीवानों की।
सिरजित थी करती वह अपनी,
दुनियाँ निज मन अरमानों की॥

(११)

उधर दवाग्नि भी जलने लगी,
रोमांचकारी अब क्रोध की।
चलने लगी चक्री निरंतर,
अंग्रेजी दमन चक्र की।।

(१२)

हर दमन के बाद कुछ आता,
कोई नूतन तब सुधार था।
संकट घिरे उन सैनिकों को,
मिलता तब वहाँ विश्राम था।।

(१३)

करलेते अपनी तैय्यारी,
विश्राम काल रक्षित दिन मे।
फिर आजाती वही जवानी,
वीर बहादुर सैनिक दल मे।।

(१४)

अनुनय सविनय के कितने दिन,
थे बीत गये कहते कहते।
होम रुल आया आन्दोलन,
पग पग अविचल चलते चलते।।

(१५)

दल की नेता थी महरानी,
एनीबेसेन्ट धीर सुलझी।
जिसने मानव सेवा का व्रत,
लेकर भारत अपना समझी॥

(१६)

जाति भेद नहीं उस दिल में,
पक्ष नहीं है न्याय भवन मे।
विशाल हृदय वह माता थी,
पूज्य वही है आज वतन में॥

(१७)

शासक की यह दमन कहानी,
रखती जगत न अपनी सानी।
सुनने को थे तैय्यार नहीं।
भारत की वह पावन बानी॥

(१८)

क्रोध उनके मूर्ति रूप लिये,
काल रुद्र बने प्रलय कारी।
बहुतों की रोजी छीन लिये,
आज्ञा हुई यही सरकारी॥

(१९)

विद्रोही वह घोषित होगा,
जब सेवक कांग्रेसी होगा।
मिले न कहीं सरकारी काम,
वह द्रोही अभियोगी होगा॥

(२०)

लाठी मिलती गोली मिलती,
कर मे लग जाती हथकड़ियाँ।
न्याय वही जो शासक कहता,
बन्दी होती जीवन घड़ियाँ॥

(२१)

ज्यों ज्यों भारत के उपवन मे,
दमन चक्र तेजी पाता था।
त्यो त्यो आजादी का सैनिक,
नित नूतन नव बल पाता था॥

(२२)

दमन बीच सहरा तप तप के,
भय दूर अधिक हट जाता था।
निर्भय वह आगे चलने का,
आजीवन व्रत ले लेता था॥

(२३)

कल तक जो अपने को जग में,
शासन का सेवक कहता था।
सम्राज प्रजा प्रिय बनने में,
स्व धर्म का अनुभव करता था।।

(२४)

आज वही विद्रोही बनके,
स्वदेश सेवक बन जाता था।
तीव्र दमन लपटों मे जलकर,
सच्चा सोना बन जाता था।

(२५)

कल तक सहता सदा अपमान,
मन मारे जो घर रहता था।
निर्भय वही दुन्दुभी लेकर,
रण भेरी ध्वनि अब देता था।।

(२६)

भय भाग रहा था तन मन से,
बलिदानी वह बन जाता था।
सन सन सन सन गोली चलती,
सीना तन के आजाता था।।

(२७)

प्रियजन गुरुजन घर छोड़ छोड़,
रण करने को बढ़ जाता था।
लेलेंगे आजादी अपनी,
आज वहीं यह कह जाता था॥

(२८)

बन जाते थे निखर निखर के,
दृढ़ सैनिक वे आजादी के।
टूट न पाती यह सेना दल,
भरती आजाती बढ़ बढ़ के॥

(२९)

उलटी गंगा अब बह बह के,
उलटी क्रिया मूर्ति बनजाती।
शासक तब घबड़ा घबड़ा के,
कुछ भी करता न बुद्धि आती॥

(३०)

बन आती उनकी चालाकी,
जब सुधार कुछ ला देते थे।
आगे बढ़ते विश्राम वहाँ,
अवसर सैनिक पा लेते थे॥

(३१)

राजनीति का यह पासा था,
मेरा पक्का दोनों कहते।
दे दे टुकड़ा इन भूखों को,
शान्त बनाते शासक कहते।

(३२)

मेरे बलिदानों का यह फल,
हँस हँस सहसा सैनिक कहते।
पा लेंगे आजादी कैसे?
नहीं मूल्य पूरा हो पाते ॥

(३३)

पूरा होगा बलिदान कभी,
सहज सफलता आ जावेगी।
काम बनेगा फिर मेरा तब,
आजादी वह आ जावेगी ॥

(३४)

तैय्यारी का संदेश मिला,
चलने का दृढ़ संकल्प लिया।
पूरा करके बलिदान यहाँ,
आये आजादी मंत्र लिया।

(३५)

जन मन साहस पा पा करके,
शक्ति संगठन यह बढ़ता था।
दिन दूना यह रात चौगुना,
दमन बीच साहस पाता था॥

(३६)

पल पल यह संघर्ष निरंतर,
दोनों दल में अब चलता था।
शीत समर बनता नाक समर,
जैसा समय मिलजाता था॥

(३७)

संघर्ष खुला भी हो जाता,
परिस्थिति जहाँ चक्कर खाती।
दोनों रहते अपने अपने,
घात्रा जैसी बारी आती॥

(३८)

राज नीति के अब दाव पेंच,
एक बाद एक चलने लगा।
चाल मय स्वार्थ की बृटिश चाल,
भारत यह अब समझने लगा॥

(३९)

फँस सकते हैं हम एक नहीं,
बृटिश तेरी भूल भुलइया।
मार मार फिर दवा लगाते,
आई तेरी यही बलइया॥

(४०)

होगा कैसे स्वीकार हमें,
क्यों हम सब बचे हैं अब भी।
मीठे मीठे थाल व्यजन में।
खा लेंगे, दे दोगे विष भी।।

(४१)

भूल हुई थी कितनी हमसे,
कितने फल अपने हम खोये।
दूध जला मट्ठा भी पीता,
फूक फूक बस रह रह खाये॥

(४२)

पिछली बातें अब रह रह के,
याद हमें भाई आजाती।
संदेह लिये अपने मनमें,
बिगड़ी बातें कब बन पाती॥

(४३)

मन मन संदेह सदा बढ़ता,
अविश्वास का फल लगता था।
उथल पुथल यह दोनों दल में,
किंचित काम नहीं सरता था॥

(४४)

सम्बन्ध प्रिय चल पाता नहीं,
अविश्वासी बनता जब राज।
चौपट होता सदगुण सारा,
विगड़ता रहता है सब काज।

(४५)

नित नव भ्रम बनता जाता था,
खाईं न कभी पट पाती थी।
उलझी उलझी रहती प्रति दिन,
विगड़ती अवस्था जाती थी,

(४६)

समय समय बतरस हो जाता,
साक्षात संघर्ष बन जाता।
अपने अपने तबै दांवों से,
दल दोनों सहसा सज जाता॥

(४७)

तब सुधार कोई आ आ कर,
शान्त सहज वह कर जाता था।
राष्ट्र निरंतर ऐसी गति से,
अविचल चलता जाता था॥

(४८)

त्याग तपस्या लेकर भारत,
बलि बेदी पर चढ़ता जाता।
हृदय की आग धधकती रहती,
जल जल के गम खाता जाता॥

(४९)

मन में साहस उल्लास लिये,
सुगीत आजादी के गाता।
ऊँचा होगा ध्वजा हमारा,
समय सदा है आता जाता॥

(५०)

बेड़ी मेरी कढ जावेगी,
स्वतंत्रता अब मिल जावेगी।
रहे न किञ्चित बन्धन जग में।
भारत माता सुख पा लेगी॥

※ षष्टम् ललकार ※

※ हमारे प्रथम राष्ट्र निर्माता ※

—:※ पूर्वज ※:—

श्री दादा भाई नौरोजी

—※※※※※※※※—

(१)

घोर निशा अच्छादित तम,
झंझा वेग पवन चलता था।
नाविक सहसा मध्य जलधि में,
नाव लिये कैसे चलता था॥

(२)

आभास न मिलता कूल कहीं,
प्रलय वृष्टि जलधर देता था।
समय प्रवीण नाविक थो कौन?
जो भारत नैय्या खेता था॥

(३)

दूर अति चमका प्राची कौन ?
नव जाग्रित जगत दिखाने को।
गिरि कंद मध्य गुहा में कौन ?
मार्ग दिखाता वह भूले को।।

(४)

राष्ट्र निर्माता पूर्वज मेरे,
वे दादा भाई नौरोजी।
जिसने यह बुनियाद दिया था,
भूखे पाते जिससे रोजी।।

(५)

श्रद्धान्जलियाँ है अर्पित उनको,
जिन्होने राष्ट्रोद्धार किया।
हम हैं सब उनके आभारी,
जिन्होने गौरव आज दिया।।

(६)

त्याग तपस्या यह थी उनकी,
नूतन अंकुर आया जिससे।
वही राष्ट्रीय गौरव गरिमा,
तरु कल्प बना कालान्तर से।।

(७)

फल आये जिस डाली डाली,
इस भारत के आजादी के।
सूझ बूझ उनकी पैनी थी,
सुझाव दिया समस्या उलझी के,

(८)

जन सेवा का दृढ़ व्रत लेकर,
प्रति पल निर्भय चलते थे।
देश प्रेम बहता रग रग में,
जोश बीच होश न खोते थे॥

(९)

मुर्दों में जीवन दे दे कर।
देश जगाते वे अपना थे।
था मूल मंत्र सही मालूम,
स्वदेश को जिसे पढ़ाते थे॥

(१०)

बिगड़ी हुई: शासन व्यवस्था,
से लड़ लड़ देश बनाते थे।
जिस आन्दोलन की छाया में,
वे टोली नई बनाते थे॥

(११)

ब्रिटेन उन्हे अपना कहता,
मान लिया था लोहा उनका।
भारत हित पूरा करने मे,
विवेक विजयी होता जिनका॥

(१२)

कंटक झाड़ी सब काट काट,
गिरि कन्दरा विकट तोड़ तोड़।
भूतल के खंदक पाट पाट,
नीचा ऊँचा सब कोड़ कोड़॥

(१३)

पथ भारत के करते प्रशस्त,
भूली जन धारा मोड़ मोड़।
जिस पथ से चलते चलते।
हम पहुंचे कराटक तोड़ तोड़॥

(१४)

वे महा महीम् पूज्य नेता,
जन नायक बन्दी भारत के।
ऐसी संस्था निर्माण किये,
प्रेम भरा जिसमे जन जन के॥

(१५)

छोटे छोटे स्रोतों से मिल,
तिव्र शक्ति शाली धार बनी।
टिक न सके कुछ देश विरोधी,
सरिता की ऐसी चाल बनी॥

(१६)

ऐसी संस्था को जन्म दिये,
जिसने हिन्द गौरव पा लिया।
भारत की बेड़ी काट काट,
आज देश बंधन मुक्त किया॥

(१७)

प्रथम कांग्रेस अधिवेशन के,
अध्यक्ष थे उमेश बनरजी।
द्वितीय नेता बूढ़े बाबा,
थे दादा भाई नौरोजी॥

(१८)

सबसे थे वे बूढ़े दादा,
जिन्हों ने बुद्धि बिवेक दिया।
पावन जिनकी अन्तर आत्मा,
प्रति फल उत्तराधिकार दिया॥

(१६)

बन्दनीय मेरे युग युग के,
जन नेता थे संकट युग के।
माँग न थी तब आजादी की,
काम करते सहज सुधार के।।

(२०)

उस युग की थी यही आवाज,
जग जीने का मिले अधिकार।
बृटिश न्याय में हमें विश्वास,
मिले सम्राज-प्रजा अधिकार।।

(२१)

जब कलकत्ते के बाद हुआ,
तृतीय अधिवेशन मद्रास।
दादा ने अध्यक्ष बनाया,
साथी पाने को अवकाश।

(२२)

जो सेनानी थे भारत के,
बदरुद्दीन तैयबजी आज।
प्रति वर्ष नियम यह चलता था,
हिन्द अधिवेशन होता ताज।।

(२३)

दैनिक जीवन तब पाने की,
बातें होती छोटी छोटी।
करके प्रस्ताव चले जाते,
पाने की अब रोजी रोटी॥

(२४)

कार्य्य सहज निश्चित करने को,
समिति एक नव निर्माण हुई।
जो क्रम अपने प्रस्तावों का,
करती, विषय-समिति नाम हुई॥

(२५)

चौथा अधिवेशन आया,
धर्म क्षेत्र त्रिवेणी तट पर।
साथी आये कोने कोने,
तीर्थ राज प्रयाग के तट पर।

(२६)

अध्यक्ष पद यह सुशोभित था,
श्री : जार्ज यूल के छाया से।
बात पुरातन नूतन बन के,
प्रस्तावित होती आशा से॥

(२७)

नव जात शिशु जहाँ जन्म लिया,
क्रिड़ा करने चला उस स्थल पर।
स्मृतियाँ उसकी नूतन आज,
अपने प्यारे बम्बे घर पर॥

(२८)

प्रति दिन गर्मी सर्दी सहती,
बीत रही थी जीवन घड़ियाँ।
बंदी माता की गोदी मे,
बोल रहा था प्रिय प्रिय लरियाँ॥

(२९)

बालक निर्भय था खेल रहा,
बाँधे मनसूबे पर मनसूबा।
सुख थी पाती बंदी माता,
देख देख उसका मनसूबा॥

(३०)

आनन्द विभोर हो जाती थी,
देख देख प्रिय प्रिय यह क्रीड़ा।
उस क्षण भूली भूली उसकी,
मिट जाती बन्दी की पीड़ा॥

(३१)

हुआ महोत्सव अब पंच शाला,
आकर्षक दृश्य निराला था।
सर विलियम बेडर वर्न जहाँ,
बन नेता शोभा पाता था॥

(३२)

हिन्दू मुसलिम अंग्रेज सभी,
चलते हैं इस मानव पथ से।
संयुक्त सभी बोल रहें हैं,
घोषित किया सभापति पद से॥

(३३)

शासक वर्ग चकित था होता,
यह शक्ति संगठन देख देख।
भय खाता नन्हें बालक से,
शिशु बढ़ता भविष्य देख देख॥

(३४)

पाँच वर्ष का विकसित बालक,
निर्भय प्रस्तुत करें वह बात।
शासन बोले क्या होगा! होन-
हार बिरवा चिकने पात॥

✲ सप्तम् ललकार ✲

द्वितीय पंचशाला

सन् १८८६ से १८६४ तक

✲ श्री सर फिरोज शाह मेहता ✲

तथा

—:❀ उनके उत्तराधिकारी अध्यक्ष ❀:—

—✲❀✲❀✲❀✲—

(१)

उल्लास लिये, उत्साह लिये,
चढ़ रहा था भारत सितारा।
गगन शिखर तल जो छूने को,
कर रहा था परिश्रम सारा।।

(२)

सहसा अपनी सहज चाल से,
वह मेदनी से उठ रहा था।
सुजोति जगमग फैल रही थी,
प्रतिभा धरातल पा रहा था।।

(३)

आज अपना वह बाल सौरभ,
जगती को अब लुटा रहा था।
अपने सरल तन सौन्दर्य से,
सभी मनुज मन खींच रहा था॥

(४)

सुरसरि के तब पावन तट पर,
जलनिधि के अंचल विशाल में,
वैभव नगरी वह कलकत्ता,
प्रमुदित थी जन समारोह में॥

(५)

छठवाँ वार्षिक अधिवेशन था
बना जन प्रिय मंच विशाल था।
सर फिरोज शाह मेहता जी,
अध्यक्ष पद यह [illegible]।

(६)

ह्यूम साहब थे श्रेष्ट मंत्री,
वैभव पूर्ण प्रखर नेता के।
जिन्होने इसे सम्हाला था,
पदासीन थे जन्म दिन के।

(७)

लार्ड सेल्सवरी का था तर्क,
होगा प्रतिनिधि शासन कैसे।
मन. स्थिति जब परम्परा नहीं,
अनुकूल लोक शाही जैसे॥

(८)

युग युग से है शासित होता,
भारत निरंकुश नरराज से।
विकसित नहीं चेतना जनमन,
नव नूतन आधुनिक काल से॥

(९)

सुख रक्षा नित पाता यह है,
नव विकसित बृटिश सम्राज मे।
यही हितैषी बातें उसकी,
बृद्धि हुई साज सामान मे॥

(१०)

शोर मचाते झूठे भाई,
यह काँग्रेसी भूले भूले।
भारत को गारद करते ने,
भारत वासी भोले भाले॥

(११)

हम हैं उनके रक्षक नेता,
बात यही है सच्ची सच्ची।
हुआ न कुछ राजनेतिक ज्ञान,
बुद्धि रही यह कच्ची कच्ची॥

(१२)

जन साधारण कांग्रेस नहीं,
बुद्धि वादी जन भारत के।
क्या इनको है अधिकार यहाँ,
बोल सकें कुछ प्रतिनिधि बन के॥

(१३)

प्रति उत्तर में आवाज उठी,
मेहता की सहज शक्ति भरी।
छिपा सकती सचाई नहीं।
बातें कभी आडम्बर भरी॥

(१४)

रवि तेज छिपा लेगा कबतक,
बादल बूंदे चलती चलती।
तर्क भरी यह बातें कैसी,
मीठी मीठी चुभती चुभती॥

(१५)

आती है नहीं सुगंध कभी,
बनावटी कागज फूलों से।
क्या कभी देखा है नहीं,
लिखे इतिहास के पन्नों से।।

(१६)

स्वशासन का जनक यह भारत,
प्रमाणित जग में था किसी दिन।
शक्ति पूर्ण थी गाँव इकाई,
विकास प्रशस्त था उसी दिन।।

(१७)

नगर नागपुर काँग्रेस हुई,
मनोनीत अब अध्यक्ष हुये।
मान्यवर पी० आनन्द चार्लू,
फसें बेड़ा के केवट हुये।।

(१८)

नर निर्भीक थे वे साहसी,
सबल थे वे राजनीति के खिलाड़ी।
आग उठे सपूत भारत के,
सदल निरंतर चले अगाड़ी।।

(१६)

प्रगति नित नूतन आती गई,
कांग्रेस हुई अब प्रयाग में।
चिर शासित भारत बोल रहा,
उमेश बनर्जी के बाणी में।।

(२०)

चिर परचित नेता उदय दिन के,
आये वही सभापति बनके।
बोल रहा जन मन की बाणी,
मंच आठवाँ अधिवेशन के।।

(२१)

मेरे शासक सम्राट प्रभो!
सुन न सकोगे आवाज कभी।
दुख तो प्रति दिन हम पाते है,
दिल से आती चिघ्घाड़ अभी।।

(२२)

अनसुनीकर उसे टाल दिया,
जब जब थी आवाज उठाई।
पीड़ित भारत दुखद कहानी,
जो कहते अंग्रेजी भाई।।

(२३)

यह तो भारत की बात नहीं,
सहसा उत्तर है मिल जाता।
ब्रिटेन बासी पक्ष विरोधी,
क्रुध प्रलाप है यह कर जाता ॥

(२४)

जब हम अपनी निज वाणी में,
यह क्रन्दन करुण सुनाते हैं।
टूट चली तोप हृदय सीमा,
मूक न उत्तर कुछ पाते हैं ॥

(२५)

न्याय प्रबल है पक्ष हमारा,
बात यही कहते जाते हैं।
मिल जायेगी बस न्याय कहीं,
संतोष यही घर जाते हैं।

(२६)

करने को नव राष्ट्र निर्माण,
कांग्रेस चली नगर लाहौर।
वयो बृद्ध दादा नौरोजी।
सभापति हुये आज स्वीकार ॥

(२७)

भारत के गौरव की नगरी,
पहिन रही थी बलिदानी बाना।
स्वागत करती थी मन हर्षित,
देख रही मुक्ति का स्वसपना॥

(२८)

रोम रोम था भारत पुलकित,
दे रहा था हृदय धन्यवाद।
सर्वोच्च गगन में यह फहरे,
ध्वजा पताका विजय आजाद।

(२९)

वह शुभ दिन आजावे निकट,
जन जीवन आये स्वाभिमान।
जागें मेरे लाल लाडले,
जग मिले विजय इन्हें महान्॥

(३०)

बड़े बूढ़े दादा यह आज,
राष्ट्र पताका जब फहराया।
कोटि कोटि मिला आशीर्वाद,
भारत गीत अनोखा गाया॥

(३१)

इंगलैन्ड मिला हिन्द गौरव,
चुनाव सेन्ट्रल फिन्सवरी के।
चुन गये वे बूढ़े दादा,
सदस्य कामन सभा सदन के।।

(३२)

इस अवसर पर माँग हुई थी,
मिले प्रतिनिधित्व अब हिन्द को।
ब्रिटेन भारत में भेद न हो,
कामन सदन हो सम्राज्य को।।

(३३)

देश भेद न है इसमें कहीं,
वर देश विशाल यह विश्व है।
जाति भेद न रंग भेद कहीं,
मानवता पूर्ण परिवार है।।

(३४)

कामन सदन हो जिस स्थल में,
यदि वहाँ प्रतिनिधित्व मान्य हो।
निश्चित है जीवन तथ्य यही,
अनुशासन सत्य स्वीकार हो।।

(३५)

जन जीवन से विद्रोह नहीं,
मिल रहने का अधिकार यहाँ।
मानव मानव को खा जावे,
यह दानवता है, धर्म नहीं।

(३६)

मानव सेवा का व्रत लेकर,
आये हैं हम इस रण स्थल में।
जन गण के मन में भर देंगे,
प्रेम पीयूष जन वाणी में॥

(३७)

कलह द्वेष का प्रश्न न होगा,
यह मीठी पाठ पढ़ा देंगे।
टिक न समाज सकेगा शोषक,
पशुता को यहाँ मिटा देंगे॥

(३८)

कहते कहते बढ़ते बढ़ते,
रथ यही निरंतर चलता था।
लाहौर से आये मद्रास,
सागर प्रेम कथा कहता था॥

(३९)

कचन मुक्ता मोती लेकर,
सहज स्वागत को था तैय्यार।
शङ्ख नाद करने को प्रतिपल,
कल कल घार, कर तल भरमार ॥

(४०)

वाणी सुनाई यह गम्भीर,
देती थी श्रवण चहुँ दिशा से।
होगा प्रबल कितना यह ज्वार,
सूखे गा जल क्या सागर से ॥

(४१)

यदि ज्वार यहाँ जब आयेगा,
भाटा भी निश्चय आयेगा।
शान्ति सुखमा का द्वार महान,
तूफानो में मिल पायेगा ॥

(४२)

पावन होता आज मद्रास,
पा कर अपने नेताओं को।
माँ दुख दर्द दूर करने को,
सुनता था उन आज्ञाओं को ॥

(४३)

उपस्थित इगारह सौ तिरसठ,
प्रतिनिधि आये हर कोने से।
सभापति थे अलफ्रेड वेब,
चकित विरोधी थे आने से॥

(४४)

हर मानव इनका साथी है,
दुखित विरोधी अब कहता है।
क्या है सच्चा जादू इनका,
जन जन के सर चढ़ जाता है॥

(४५)

भारत वासी ब्रिटेन वासी,
जो भी निकट संग आता है।
सहसा भेद सभी मिट जाता,
इनका अपना बन जाता है।

(४६)

राज नीति का विकट खेल यह,
सह हमको यह दे जाता है।
रुक जाता है चतुर विरोधी,
ऐसे फन्दे में घिर जाता है॥

☆ अष्टम ललकार ☆

सन् १८६५ से १९०० तक

—☆ श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ☆—

काल से

☆ नारायण रमेशचन्द्रा वरकर काल तक ☆

—☆☆☆☆☆☆☆—

(१)

जीवन दश शाला बीत चुका,
बल था कुछ बढ़ता जाता।
निर्भयता थी आती जाती,
बल अपना अब मिलता जाता॥

(२)

अब छूट रही थी पर आशा,
अपने पैरों चल पाते थे।
परवाह नहीं थी गिरने की,
गिर गिर के भी उठजाते थे॥

(३)

स्वावलम्बन का मंत्र अमोघ,
मिला राष्ट्र यह जाग उठा था।
राष्ट्र चेतना लह लह करती,
कुसुमित यह सुरभि उद्यान था॥

(४)

लुटा रही थी मुकुलित कलियाँ,
हँस हँस सौरभ सुगंध थी।
देख जिसे यह भारत माता,
दुख बन्धन अब भूल रही थी॥

(५)

ले ले कर यह नित नव आशा,
उपवन अपना साच रही थी।
फल आयेंगे कुसमित डाली,
सपना मीठा देख रही थी॥

(६)

उत्सव आया वह सालाना,
होने लगी सफल तैय्यारी।
आज कांग्रेस होगी पूना,
शैशव भूली आई बारी।

(७)

प्रथम कांग्रेस का स्थान यही,
जब देती गाते विधि साथ नही।
वह शुभ दिन न मिला इस स्थल को,
तब से जनता पथ देख रही॥

(८)

मन वान्छित यह अरमान मिला,
जै जै करती टोली टोली।
आती राष्ट्र ध्वजा फहराती,
खेलेगी बलिदानी होली॥

(९)

आये पन्द्रह सौ पचासी,
प्रतिनिधि पूरे भारत बासी।
कर लेंगे व्रत अपना पूरा,
इच्छा उनकी है अविनासी॥

(१०)

श्रेष्ट सभापति गौरव पायें,
सच्चे सेवक इस भारत के।
वीर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी,
नेता थे वे जन जीवन के॥

(११)

उनकी यह आवाज बुलन्दी,
जाग उठी वीरोचित हुँकार।
कल्पना की उच्च भावुकता,
सुनता था यह सब संसार॥

(१२)

ओज भरा यह पांडित्य भरा,
साहस का कर रहा संचार।
जीवन दाता भाषण उनका,
बल बुद्धि विद्या का भंडार॥

(१३)

थे करते विश्वास महा,
इंगलैन्ड पालियामेन्ट की।
वह दिया था सुझाव अनूठा,
जटिल समस्या राजनीति की॥

(१४)

कार्य्य व्यवस्था अग.बना लें,
दल कोई अब इंगलैन्ड मे।
हिन्द राजनीति प्रधान विषय,
उसका हो निज पूरे दल में॥

(१५)

पथ दर्शक है सच्चा मेरा,
अंग्रेजी सभ्यता विश्व में।
पूज्य यही है राजनीति का,
गुरु यही है मार्ग विकास में॥

(१६)

राज्य भक्ति आदर्श हमारा,
हम उनके सच्चे सेवक हैं।
वहीं बनेगा कार्य्य हमारा,
वह मेरा सच्चा नाविक है॥

(१७)

था उनका दल आदर्श यही,
प्रेम भाव बढ़ता जाता था।
इसी मार्ग पर चलते जाते,
बाजा रण भेरी बजता था॥

(१८)

प्रति दिन नूतन जगता जाता,
सद्भाव ब्रिटेन निवासी में।
किन्तु न अन्तर कुछ आता था,
शासक के शासित वाणी में॥

(१९)

जगत श्रेष्ट चालाकी उसकी,
कुछ देकर था रक्षा पाता।
विद्रोह सहज था दब जाता,
भारत भी था बढ़ता जाता॥

(२०)

पग पग चल कलकत्ता आये,
कांग्रेस नया उत्सव पाये।
सभापति माननीय मुहम्मद,
रहीम तुल्ला सयानी हुये।

(२१)

हिन्दू मुसलिम हिन्दुस्तानी,
जबाब शासक मुह तोड़ दिये।
मानवता परिवार हमारा,
भाषण थे पुरजोर दिये॥

(२२)

चल सकेगी भेदनीति नहीं,
हक अपना लेने आये हैं।
जीने का अधिकार हमारा,
जीने दो कहने आये हैं॥

(२३)

अमरावती हुआ अधिवेशन,
मच कांग्रेस बना निराला।
पद सभापति पदासीन हुये,
श्री सी० शङ्कर नायर आला॥

(२४)

इस युग के समर्थ महा पुरुष,
सेवा की तूती बोल रही।
अतुल कार्य्य क्षम्य शक्ति उनकी,
आज भाग्य भारत खोल रही।

(२५)

देख प्रतिभा भारत उनकी,
शासक गुण उनका जान लिया।
सदस्य हाई कोर्ट मद्रास,
निज कार्य्य कारणी सरकार लिया॥

(२६)

त्याग पत्र देकर इस पद से,
मार्शल ला जब विरोध किये।
लोक प्रिय हिन्द नेता बनकर,
हिन्द प्रतिष्ठा में योग दिये॥

(२७)

त्याग तपस्या का गुण गाकर ,
जन जन करता था अभिनन्दन ।
जन जीवन जाग्रित का लक्षण ,
करता वीरोचित स्तुति बंदन ॥

(२८)

वर्ष हमारे यह बीत गये ,
जीवन के अब बारह पूरे ।
परिस्थितियाँ विरोधी बनती ,
शासक के सहयोग अधूरे ॥

(२९)

नव निर्मित शोभा अधिवेशन ;
कांग्रेस मद्रास पाता था ।
मान्यवर आनन्द मोहन वसु ,
ब्रह्म समाज मान्य नेता था ॥

(३०)

विनय वाणी बदली अध्यक्ष ,
भाषण मे खुला विरोध किया ।
शिक्षा विभाग में यह अन्याय ,
नव गठन बना अब रोक दिया ॥

(३१)

यह भारत को स्वीकार नहीं,
बसु मोहन ने एलान किया।
नव निर्माण विधि विधान नहीं,
यह भारत का अधिकार लिया॥

(३२)

जब तक न होगा स्थान अपना,
उस विधान पार्लिया मेन्ट में।
बन सकती है व्यवस्था नहीं,
कुछ भी काम के उस धाम में॥

(३३)

प्रति दिन विरोध बढ़ता जाता,
भारत सैनिक जुटता जाता।
विनय नरम दल हटता जाता,
सबल गरम दल आता जाता॥

(३४)

चुने वीर निर्भीक सिपाही,
अबकी लखनऊ कांग्रेस में।
अध्यक्ष रमेश चन्द्र दत्त,
चमके राजनैतिक हिन्द में।

(३५)

अठारहवीं सदी का अंतिम,
नेता मंच खुले ललकारा।
होगा जब तक किन्चित सम्भव,
पार नहीं यह बेड़ा मेरा ॥

(३६)

उठ न सकेगा जन जीवन स्तर,
सुख न मिलेगा भारत घर को।
हो न सकेगा काम हमारा,
चैन नहीं है तब तक हमको ॥

(३७)

बढ़ी मालगुजारी भूमि कर,
कैसे भारत रोटी पाये।
जब वृटिश कल कारखानों की,
खुली प्रतिस्पर्धा रण आये ॥

(३८)

टिक न सके गृह उद्योग यहाँ,
हुये दुर्भिक्ष पीड़ित ग्रामीण।
करा सके उत्थान हमारा,
कौन है अर्थ शास्त्री. प्रवीण ॥

(३६)

ग्राम पंचायती राज बना,
था यहाँ पूर्व हजारों साल।
लाठी गोली यह राज्य पुलिस,
शासन अफ़सरी बनी विशाल ॥

(४०)

हम जब व्यक्त न कर पाते हैं,
विचार भी अपना पत्रों से।
एकत्र न मिल कर हो पाते,
सभा स्वतन्त्र मत प्रकाशन में ॥

(४१)

तो है हितकर मार्ग हमारा,
राज द्रोह दे दें रण भेरी।
खुल कर खेलें खेल संग्राम,
आवे चाहें जिसकी बारी ॥

(४२)

जयश्री उनकी, अथवा अपनी,
जाग रहे मन उत्तेजित भाव।
यह है जन ललकार हमारी,
सबका निर्णय सहज स्वभाव ॥

(४३)

अब चलता है देश हमारा,
लेकर यह अमिट भाव महान,
अब निज भाग्य भविष्य गर्भ में,
होगा क्या पतन या उत्थान ॥

(४४)

प्रति दिन चलती यही ललकार,
आ गये हम फिर अब लाहोर ।
हो गये सभापति कांग्रेस,
नारायण गणेश चन्दा वरकर ॥

(४५)

शताब्दी थी पूरी इस वर्ष,
लेकर नव काल नव इतिहास ।
उलट रहा था पन्ना अपना,
युग युग का लिखा वह इतिहास ॥

(४६)

भारत इस पथ चलते चलते,
करता अडिग संकल्प विकल्प ।
चलता राजनैतिक रण शान्त,
बीते समय कितना भी कल्प ॥

(४७)

विजय हमारी निश्चित होगी,
लेकर चल पड़े यह विश्वास।
इस मानवता के रण स्थल में,
हमको नैतिक शक्ति की आस ॥

(४८)

जिस पथ पर है देती रहती,
पराजय भी विजयी संदेश।
पथ नैतिकता है वह मेरी।
चले पथ अडिग निरंतर देश ॥

—✲✲✲✲✲—

—: नवीं ललकार :—

सन् १९०१ से १९०५ तक

दीन शा इदल जी वाचा से गोपाल कृष्ण गोखले

— ❀ तक ❀ —

(१)

नव शताब्दी नव युग लायी,
जीवन का नव संदेश लिये।
उत्साह लिये, उल्लास लिये,
एक परिवर्तन अरमान लिये॥

(२)

राष्ट्र क्षितिज प्राची में चमका,
उषा का नव सिङ्गार लिये।
भूतल से था सहज उठ रहा,
नव सितारा नव जोति लिये॥

(३)

लुटा रहा जो इस जगती को,
हृदय खोल नव प्रकाश अपना।
देख रहा था राष्ट्र हमारा,
नव जागरण का नया सपना।।

(४)

कांग्रेस मंच पर उदय हुआ,
राष्ट्र चेतना विश्वास लिये।
सहज भाव नव बलिदान लिये,
नव निश्चय दृढ़ कर्तव्य लिये।।

(५)

प्रति दिन अब बढ़ते चलने का,
मन में यह नव संकल्प लिये।
पथ विपदाओं से रण करने,
का दिल में नव अभिमान लिये।।

(६)

वह राष्ट्र वीर सेनानी था,
श्री दीनशा इदल जी वाचा।
आजीवन सेवा व्रत लेकर,
देह कर्मणा मनसा बाचा।।

(७)

जग चलने का वर अनुभव था,
प्रथम राष्ट्र निर्माता नेता।
राष्ट्र कंगाली कारण देखा,
धन बाहर वाला ले जाता।।

(८)

मार्ग अनेकों जिससे जाता,
लुट लुट के धन सम्पति सारा।
द्वार खुले यदि बाहर जावे,
भर सकता घर कैसे पूरा।।

(९)

नित चार कोटि भारत बासी,
तरस तरस के भूखो रहते।
कभी नसीब नहीं है पूरा,
भोजन कैसे जीवन पाते।।

(१०)

लग जावे तट कर भारत में,
दरिद्रता फैल गयी घर घर।
समृद्ध बनता जावे कोई,
मालदार अब लंका सायर।।

(११)

हम भूखे कंगाली पाते,
घर भरते हैं बाहर वाले।
उलटे उन्नति कर लग जाते,
बन्धन पाते भारत वाले ॥

(१२)

यह नीति दुरंगी है घातक,
जो करती है हमको घायल।
शासन के इन हथकडो से,
भारत होता है अब घायल।

(१३)

राष्ट्र प्रतियोगिता में आवे,
तो देख बाजी किसकी है।
कलाकार मेरे भारत के,
प्रथम दिनों मे जीत चुके हैं ॥

(१४)

अथक परिश्रम हम करते हैं,
काम पड़े पर देख चुके है।
हर मौके पर बाहर वाले,
लोहा मेरा मान चुके हैं।

(१५)

मेरे शासक नीति तुम्हारी,
जिससे हम अब हार चुके है।
भेद भाव जावे शासन से,
माँग यही हम माँग चुके है।।

(१६)

अब भारत के पूरे प्रतिनिधि,
अहमदाबाद के नगर गये।
ताज आज हमारे राष्ट्र का,
सुरेन्द्र नाथ बनर्जी पाये।।

(१७)

जिसका ऊँचा आदर्श सहज,
जगत प्रसिद्ध होता जाता।
लंका शायर के हर दल पर,
विश्वास सहज बनता जाता।।

(१८)

उद्धार हमारा इनसे है,
न्याय यहाँ भारत पायेगा।
जनतन्त्री इन विकसित दल से,
विकास क्रम जब मिल जावेगा।।

(१९)

तब आवाज हमारी होगी,
आजादी भी मिल जावेगी।
मिल जावेगा तब न्याय वहाँ,
दुनिया अपनी बन जावेगी॥

(२०)

लंका शायर के विकसित हैं,
लोग अधिक इस जगती तल में।
शासक दल यह हट जावेगा,
विकास क्रम के परिवर्तन में॥

(२१)

काल चक्र यह नित तेजी से,
निरंतर प्रति पल चलता जाता।
मद्रास कांग्रेस की बारी,
लाल मोहन घोस थे नेता॥

(२२)

यद्यपि रखते सच्चे दिल से,
आस्था बृटिश नीति शासन में।
तथापि आलोचक भी अच्छे,
इस कार्य नीति सरकारी में॥

(२३)

यह कहते अब अध्यक्ष घोष,
काँग्रेस मंच ललकार दिये।
क्या हक है उसको जिसने,
उद्योग हमारे छीन लिये॥

(२४)

लंका शायर के निश्चित हित में,
गृह धंधे भी जो नष्ट किये।
उत्पति टैक्स आज नया लगा,
करोड़ों स्टर्लिङ्ग ले जायें॥

(२५)

राष्ट्रीय धन सामग्री मेरी,
अब चल जाये लंका शायर।
शलिल हीन यह मीन तड़पती,
रह जावे अब भारत सागर॥

(२६)

लाद लाद कितने कर बोझिल,
करते निमन्त्रित अकाल यहाँ।
अबतक न कहीं हम देख सके,
यह वही भयकर नाच यहाँ॥

(२७)

श्रमिक किसान मरें नितभूखों,
विवश बने हम हैं अब रोते।
दुखदा है यह बनती जाती,
नौकर शाही की करतूतें ॥

(२८)

काल अकाल खर्च ब्यर्थ बढ़ा,
दरबार अनोखा दिल्ली करते।
लुटा लुटा यह सम्पति सारी,
हिन्द खजाना खाली करते ॥

(२९)

व्यर्थ यह ठाट बाट बढ़ाते,
चूस रहे यह खून हमारे।
सच्चाई से ओझल रखते,
कैसे जाने सम्राट हमारे ॥

(३०)

हम हैं प्रजा प्रिय सम्राट के,
रक्षक हैं सम्राट हमारे।
भक्षक यह नौकर शाही दल,
जिससे आज यहाँ हम हारे ॥

(३१)

हट जावे यह नौकर शाही,
सम्राट प्रजा सुख पाजावे।
हमको है यह अधिकार नहीं,
ओट पड़े शासक हट जावे॥

(३२)

मेरी यह है अब मजबूरी,
अपनी मरजी कुछ आज नहीं।
संयुक्त राज्य लंका शायर,
स्वशासित हमारा देश नहीं॥

(३३)

सम्राट तुम्हारी मरजी है,
शेष रही बस आस तुम्हारी।
यह मेरे दिल की अरजी है,
यह करुण कहानी आज हमारी॥

(३४)

चार वर्ष उनइस शदी बीते,
अब बम्बे कांग्रेस हमारी।
सभापति सर हेनरी काटन,
सेवा व्रत भारत हितकारी॥

(३५)

सेवा इनकी अमर कहानी,
भारत प्रति दिन अब गायेगा।
प्रथम यह इनकी कल्पना थी,
संयुक्त हिन्द बल पायेगा ॥

(३६)

कल्पना यही साकार हुई,
प्रतिभा जग इनकी फैल गई।
भारत पाये नव पथ अपना,
बनी स्मृति इनकी आज नई ॥

(३७)

भारत गौरव नगरी काशी,
करती थी स्वागत तैय्यारी।
युग युग अपना इतिहास लिये,
वह संस्कृति कहानी सारी ॥

(३८)

भारत के इस हृदय स्थल में,
अतीत अंकित था पूरा अपना।
प्रतिबिम्बित बर्तमान अनूठा,
भविष्य निश्चय यह अमिट बना ॥

(३६)

कर रही अभ्यक्त अभिनन्दन,
चिर संचित अरमान लिये।
नैतिकता का अपना गौरव,
निज सहज आत्म विश्वास लिये।

(४०)

नव प्रतिभा मे नव पथ ले,
देश सेवा हृदय उत्साह ले।
उदय हुये कांग्रेस मच पर,
वीर गोपाल कृष्ण गोखले॥

(४१)

दीन हीन वे गरीब किसान,
नित विपदा जो सहते रहते।
ठिठिर ठिठिर सहते शीत शरद,
ग्रीष्म ताप तिव्र सदा सहते॥

(४२)

दो रोटी दो जीवन पाने को,
सदा वे आज तरसते रहते।
तृण निर्मित इन झोपड़ियो में,
नगे भूखे प्रतिदिन मरते रहते॥

(४३)

न जाने क्या क्या सदा सहते रहते ,
मूक बने जो मरते रहते ।
वे हैं उनके आराध्य देव ,
मीठे शब्दों में थे कहते ।।

(४४)

दिन रात जुते अपने खेतों ,
में कड़ी मेहनत जो करते ।
आवाज नहीं वे जब अपनी ,
शासन तक हैं पहुंचा सकते ।।

(४५)

उन्हीं की बातें आज यहाँ,
हम सब मिल करने आये ।
अब यह भारत के दुख गाथा ,
कब तक जग तल में हम गायें ।।

(४६)

करने को अन्त इसे जग से ,
दृढ़ ब्रत निश्चय लेने आये ।
मेरे नर जीवन का क्षण क्षण ,
काम सदा भारत के आये ।।

(४७)

मानव श्रम शोषित है होता,
शाशित नौकर शाही कड़ियों से।
संघर्ष हमारा इनसे है,
शासन के चुभते यंत्रों से ।।

(४८)

दो पैसा के यह लागत का,
अपना जो है नमक हमारा।
मिलं पाँच आने में हमको,
शासन बना तमासा सारा ।।

(४९)

जन सम्पति पर सीधा डाका,
यही गरीबी कारण बनता।
आज सुधार इसे करने को,
यह भारत दल मेरा चलता ।।

(५०)

जन जीवन रही यही पुकार,
हर कोने से यही ललकार।
देर न हो अब किञ्चित कुछ भी,
हो जावे आज यही सुधार ।।

(५१)

हो जावे बन्द विनय पथ,
मिले न प्रेम की कोई राह।
विक्षिप्त हृदय जब निराश्रित हो,
उठे जन जन के मन से आह॥

(५२)

श्रेयकर होगा मानव मार्ग,
असहयोग का श्रेष्ट बलिदान।
हो सकता वह दिन आ जावे,
माने न मन शाही नादान।

(५३)

मानव नेता के सविनय से,
रण की लोल लहर उठती थी।
समय की प्रतिज्ञा में फिर भी,
बदली धारा में चलती थी॥

(५४)

नौकर शाही करतूतों से,
व्यग्र विकल जब हो जाते थे।
नम्र नेता यह तब भारत के,
सहसा आगे आ जाते थे॥

(५५)

पसंद न आई नीति उन्हें,
यह बंग भंग कर्जन स्वभाव।
शिक्षा करके यह खर्चीली,
जले पर नमक हुआ छिड़काव॥

(५६)

लेलो मेरा यह अब अन्तिम,
नौकर शाही तू नमस्कार।
जन हित के तू खुले विरोधी,
मेरे अनुभव के तत्वसार॥

(५७)

निज अनुभव दिन अन्त की बात,
कभी न पा सके भारत त्राण।
नौकर शाही आश त्याग कर,
अपनी शक्ति होगा निर्माण॥

(५८)

इसी प्रेरणा से ही चलकर,
भारत सेवक समिति साकार।
बनाया बीर सेनानी ने,
देकर अपनी नई ललकार॥

(५९)

सुन कर नेता की हुंकार,
आगई नई शक्ति उल्लास।
निश्चित होगा खुला संघर्ष,
हृदय जमता जाता विश्वास॥

(६०)

यही राजनीतिक धारा की,
यह प्रथम थी जन सक्रीय मोड़।
पथ रण संघर्ष बनाने में,
होने लगी जो आगे होड़।

— ✻❀✻❀✻ —

❀ दशवीं ललकार ❀

—:❀ दादा भाई नौरोजी काल से विलयम बेडर वर्न ❀: –

❀ काल तक ❀

✲ बाइसवीं कांग्रेस से छबीसवीं कांग्रेस तक ✲

—❀❀❀✲❀❀❀—

(१)

भारत मन रण करने का,
दृढ़ निश्चय लेकर बढ़ता था।
रण पथ रण समय विवाद विषय,
प्रति दिन का बनता रहता था॥

(२)

स्वार्थ पुजारी नौकर शाही,
चूस रहा था खुल्लम खुला।
दिन दिन कोहराम बढ़ा था,
कोने कोने हल्लम हल्ला॥

(३)

फूट रही थीं धारायें दो,
नरम गरम दल की थी चर्चा।
परिस्थितियो के चपेटे से,
खुला बट न पाता यह पर्चा॥

(४)

बंग भग किया लार्ड कर्जन,
हिन्दू मुसलिम भेद बनाये।
खौल रहा था देश कड़ाहा,
जलती ज्वाला लपट जलाये॥

(५)

उबल रहा था पूर्ण बंगाल,
असतोष पवन गगन में था।
भारत चिर संचित राज प्रेम,
टूट टूट जिसमें उड़ता था॥

(६)

वृद्ध सभापति नेता दादा,
नौरोजी गौरव पाये थे।
कांग्रेस हुई थी कलकत्ता,
उपनवेश मिले प्रस्ताव थे॥

(७)

हिन्द हुआ अब फौजी शासन,
विधान आर्डिनेन्स रूप लिया।
शान्ति बनाने मे आज पुलिस,
स्वयं शान्ति का अब खून किया।।

(८)

असहयोगी बना यह भारत,
प्रथम रण निमंत्रण देता था।
रण कौशल यह प्रथम प्रदर्शन,
चकित जगत यह हो जाता था।।

(९)

नूतन धारा नूतन जीवन,
नूतन यह अब रण कौशल था।
शाही लाठी गोली डंडा,
आधुनिक हथियार शतदल था।।

(१०)

इधर निहत्थे जनता सेवक,
असहयोग अस्त्र निराला था।
इस जगती के वक्षस्थल पर,
रण ऐसा सुना न देखा था।।

(११)

देख इसे नव पश्चिम नेता,
निर्भय जग हँसी उड़ाता था ॥
भारत का यह आज प्रदर्शन,
पागल पन बात बताता था ॥

(१२)

स्वशासन मिले स्वदेश भारत,
बूढ़े दादा ने एलान किया।
निज जान हथेली पर लेकर,
जन भारत ने ललकार दिया ॥

(१३)

जनमत भारत का एक हुआ,
श्रेष्ट संकल्प बलिदान किया।
व्यग्र हुआ दल लंका शायर,
हिन्द अरमान था जान लिया ॥

(१४)

जगतल होता शासक शासित,
का यह था संघर्ष निराला।
राष्ट्रीयशिक्षा हो राष्ट्र मे,
बना प्रस्ताव यहाँ अकेला ॥

(१५)

नव युग का नव शक्ति लिये,
भारत वहिस्कार आन्दोलन।
मंच गूज रही करतल ध्वनि,
जन मन करता था अभिनन्दन॥

(१६)

स्वशासन यह राष्ट्रीय शिक्षा,
असहयोग भारत वहिस्कार।
सुन दौड़ पड़ा भारत अपना,
जन मन की उठी यही पुकार॥

(१७)

चार प्रस्ताव यह पास हुये,
जो थे भारत भाग्य विधायक।
सहसा अब जाग उठे क्षण में,
आजादी के भारत नायक॥

(१८)

आजादी के दीवानों में,
मत भेद हुआ पैदा ऐसा।
गरम नरम यह दल दो बनके,
आपस में लड़ते थे जैसा॥

(१६)

देख विरोधी लंका शायर,
मन ढाढ़स तब कुछ आता था।
राज्य शासन हिन्द उनका तब,
रहने का सपना बनता था,

(२०)

लक्ष एक था, हृदय एक था,
भेद न था कुछ दोनों दल में।
रण पथ में उठता विरोध था,
दीवाल बना युद्ध स्थल में॥

(२१)

किन्तु दादा तेज प्रभाव से,
विरोध भी गिरता रहता था।
हटती थीं बाधायें सारी,
तम प्रकाश बनता रहता था॥

(२२)

अवकाश समय जब दादा के,
ज्यों ज्यों कुछ आते जाते थे।
भाव विरोधी दोनों दल के,
त्यों त्यों सहसा बढ़ते जाते थे॥

(२३)

दल नेता थे नरम गोखले,
जिनका पावन हुआ बलिदान।
गरम दल के बीर सेनानी,
वह लोक मान तिलक भगवान॥

(२४)

यद्यपि ताज न था उनके सर,
तथापि हृदय सम्राट महान्।
नित नूतन अब चमक रहा था,
हिन्द पावन उनका बलिदान॥

(२५)

रण करने का ढंग निराला,
तेज पुञ्ज उनका अपना था।
देख विरोधी दल बचपन से,
सदा हृदय डरता चलता था॥

(२६)

लंका शायर के शासक दल,
लख प्रतिभा यह घबड़ाता था।
भारत पूर्वज बीर कथायें,
प्रति दिन वह गाता रहता था॥

(२७)

वीर शिवाजी कथा पुरानी,
नूतन कर आज सुनाता था।
जुट आये राजे महराजे,
शिव जयंति जहाँ मनाया था॥

(२८)

भीषण भाषण रचना अपनी,
जब उसने निर्भय गाया था।
अठारह मास की कड़ी कैद,
सजा सहज उसने पाया था॥

(२९)

सहीं सजायें, कितनी उसने,
बीर कथायें अब वह गाने में।
सत्य सदा निर्भीक पुजारी,
अपनी बातें जग कहने में॥

(३०)

कांग्रेस मंच मजबूत बने,
कुछ करने का संकल्प करें।
जन्म सिद्ध अधिकार हमारा,
आजादी पाने का यत्न करें॥

(३१)

यही उनकी ऊँची कल्पना,
जिसने जग गौरव मान दिया।
जगतल का था वह पूज्य देव,
जिसने सब कुछ बलिदान किया ॥

(३२)

रण आजादी के सेनानी,
का स्वर्णांकित कथा बलिदान।
रण करने की सहसा रण भेरी,
फूका करके प्रथम बलिदान ॥

(३३)

यह नेता पहला नाविक था,
जिसने भारत पथ खोज लिया।
झँझा घटा पवन प्रलयंकर,
भारत नैया को घाट दिया ॥

(३४)

जगतल उसकी अमर कहानी,
कहने की मुझ में शक्ति नहीं।
मागें से घटता कब कल्पतरु,
लिखे घटे यह इतिहास नहीं ॥

(३५)

प्रथम सिपाही आजादी का,
विद्रोही झण्डा फहराया।
शासक दल तब लंका सागर,
कच्चा खाने का यत्न किया॥

(३६)

दे दे कर कठिन यातनायें,
लौटा देने की चाल किया।
कुशल सिपाही बीर बहादुर,
चुनौती सभी स्वीकार किया॥

(३७)

समर सहज शासक दल से था,
घर समर कठिन हटते दल से था।
अनुकूल नही है यह अवसर,
रण लेने का जो कहता था॥

(३८)

प्रति दिन बिवाद चलता रहता,
अपने घर सैनिक दल में था।
खुले नहीं लड़ना शासक से,
दल तैय्यार नहीं कहता था॥

(३६)

करनी है तैय्यारी हमको,
शत्रु दल में है शक्ति भरी।
करें दमन मिलता चूर नहीं।
यही चतुर चालाकी सारी॥

(४०)

गरम नरम दो धारायें बन,
मध्य रण स्थल मे चलती थी।
सफल नीति नौरोजी की,
मिश्रण दोनों से बनती थी॥

(४१)

बीर बहादुर यह दोनो दल,
सच्चा भारत का सेवक था।
विश्वास अटल अपना अपना,
स्वमेल कैसे हो पाता था॥

(४२)

हित स्वदेश की आत्मिक चिन्ता,
दल मन दोनों की बढ़ती थी।
सत्यता से दूर रहे कौन!
विकट समस्या यह बनती थी॥

(४३)

दोनों के मन में भेद नहीं,
हितपथ अलग अलग लखता था।
जो निकट अति निकट रह के भी,
दूर दूर अधिक रहता था॥

(४४)

देश हित हिन्द की रक्षा में,
दल विरोध सहसा बढ़ता था।
आपस में दुखदा आज वही,
संघर्ष रूप जो बनता था॥

(४५)

रहा प्रस्तावों का युग नहीं,
यह कुछ करने का वक्त मिला।
बंधन से होना मुक्त मुझे,
युग का पावन संदेश मिला॥

(४६)

हम हैं भारत पूत लाडले,
तोड़ बढ़गे माता बन्धन।
यह हम को स्वीकार नहीं,
भारत माता बेड़ी बन्धन॥

(४७)

यही रहा संकल्प हमारा,
हो रणस्थल पावन बलिदान।
स्वतन्त्रता मूल्य चुकादेंगे,
मेरा यही कर्तव्य महान॥

(४८)

हो सकती इसमे दो राय नही,
करुण रुदन यह माता करती।
सुन सुन के अब जोश हमारा,
गरम रक्त तन छाती फटती॥

(४९)

तन मन धन की परवाह नहीं,
सर्वस्व निछावर यह मेरा।
माता बंधन कटजावेगा,
या सर कटजावेगा मेरा॥

(५०)

गरम गरम यह ललकार उठी,
गरम दल समर तैय्यार उठा।
जन मन जीवन में जोश उठा,
जो आज सहज हुंकार उठा॥

(५१)

पा लेगें आजादी अपनी,
जन मन भारत यह कहता था।
मसल कुचल अब जायेगा वह,
जो पथ रोड़ा हो कहता था॥

(५२)

इधर नरम दल नेताओं ने,
कहा सामयिक आवाज़ नहीं।
यदि होगा भारत रण कौशल,
हटना होगा संदेह नहीं॥

(५३)

जो कुछ भी अब हो पाया है,
जाग राष्ट्रीयता पाई है।
सो जायेगी बस आज वही,
चिन्ता की बारी आई है॥

(५४)

हैं मेरे साथी सहयोगी,
जिनके रग रग में जोश भरा है।
भारत मान गौरव की शान,
उनके मन अरमान भरा है॥

(५५)

होश न है तन में कुछ किन्चित,
सहज बलिदान शान जगी है।
बढ़ के हो जावे रण कौशल,
अटल लगन यह आज लगी है ॥

(५६)

क्रूर हृदय पूरा शासक दल,
नैतिकता का कुछ नाम नही।
दमन चक्र सहज चल जावेगा,
बन आयेगा कुछ काम नही ॥

(५७)

भारत ऐसा तैय्यार नहीं,
जो दे सके पूरा बलिदान।
यह कहना पूरा सत्य नही,
जाग गया राष्ट्र प्रेम महान ॥

(५८)

यदि ऐसा होता तो यह क्यों,
बन्धन आता माता के तन।
शूर वीर बसुन्धरा भारत,
हैं कितने नर हिम्द भीरु मन ॥

(५६)

जिनको चलना आसान नहीं,
युग युग की यह कमजोरी है।
है सबल बनाना आज उन्हें,
लड़ने की पाठ पढ़ाना है॥

(६०)

प्रगति मिलेगी धीरे धीरे,
गूलर फल पकता आज नहीं।
हित कर राष्ट्र भली बात यही,
संघर्ष न हो खुल आज कहीं॥

(६१)

प्रगति भरा पथ मेरा होगा,
कैसे मेल बने साथी से,
उन्होने मन में ठान लिया।
रण करना है शासक दल से॥

(६२)

इन विकट परिस्थितियों में चल,
नागपुरी निश्चय बदल गया।
कांग्रेस चली होने सूरत,
नरम दल बल साहस मिल गया॥

(६३)

उस पूरे दल की इच्छा थी,
सभापति बने तिलक भगवान।
बीर रास बिहारी घोस का,
किन्तु था यह प्रस्ताव महान॥

(६४)

मान्यवर लाला लाजपत का,
आज दूसरा प्रस्ताव हुआ।
बीर गरम दल के साथी थे,
जिसके पोषक एलान हुआ॥

(६५)

निश्चय समझा था इस दल ने,
होगा इसपर अब समझौता।
त्याग तपस्या लाला जी की,
मानेगा हर दल का नेता॥

(६६)

विधान आड़ लिया इस दल को,
जो पूरा उनका साथी था।
विधिवत प्रस्ताव रहा ऐसा,
विजयी सभापति तब घोस था॥

(६७)

होने लगा मंच हो हल्ला,
लाला ने लौटा नाम दिया।
मिले निवेदन अवसर मुझको,
वैध तिलक ने यह माँग किया,

(६८)

सुने न कोई उस गरमी में,
यदु कुल की हुई लड़ाई थी।
कुर्सी चलती, जूता चलते,
ऐसी मति गई भुलाई थी॥

(६९)

दोष बतायें हम किसका,
दृष्टि विन्दु था अपना अपना।
दोनों दल की पावन निश्चित,
देश हित की उत्कट कामना॥

(७०)

तिलक दल की प्रबल इच्छा थी,
बने प्रस्ताव प्रभाव कारी।
लंका शायर के लेबर दल से,
मिल कामन सभा बहस भारी॥

(७१)

निर्मित होगा पथ स्वतन्त्रता,
राष्ट्र सबल तब बन पायेगा।
बेड़ी बन्धन कट जायेगा,
निर्भय गगन ध्वजा फहरायेगा॥

(७२)

चिर संचित मन भारत गौरव,
पा न सका वह वीर पुजारी।
खो कर मान, सहता अपमान,
किन्तु हार न सका रणधारी॥

(७३)

धीर निर्भीक वीर बहादुर,
आजादी का था दीवाना।
रण करने का सच्चा निश्चित,
लेकर आया था परवाना॥

(७४)

रण रुकने का निर्णय कैसे,
आजादी के सेनानी का।
जग सुनता रण भेरी नित था,
जागृत केसरी मरहठा का॥

(७५)

नित्य जागरण जीवन देता,
बीर केहरी के नादों का।
खटक रहा था शासक दलको,
बीर प्रकाशन दो पत्रों का॥

(७६)

जन जन में यह फूंक रहा था,
बीर पूजा हिन्द गौरव का।
लगा हुआ सफल बनाने में,
रण होम रूल आन्दोलन का॥

(७७)

वह था भारत हृदय सम्राट,
निश्चय उसका रण करने का।
आयें बाधायें जग कितनी,
वह कैसे था तब रुकने का॥

(७८)

इधर थे पूर्ण मानवता के,
पावन हृदय भारत सम्राट।
उधर बृटिश शासक शाही दलके,
शोषक सैनिक राज्य सम्राट॥

(७६)

इधर मानवता हृदय विशाल,
उधर निरंकुश क्रूर व्यवहार।
इधर कष्ट सेवा निर्विकार,
उधर अस्त्र सस्त्र की है मार॥

(८०)

इधर सत्य अहिन्सा हथियार,
उधर गोली करें शिकार।
इधर है प्रबल आत्म विश्वास,
उधर आधुनिक बना औजार॥

(८१)

इधर त्याग तपस्या बलिदान,
उधर ठाट बाट का दरबार।
यह देख रहा सहज तुमुल रण,
होता आज कैसे संसार॥

(८२)

यह सब कुछ था, किन्तु न डरता,
रण धीर भारत वीर महान।
विजयी होगा, वह था कहता,
नैतिकता का सही बलिदान॥

(८३)

पथ चलते सहसा शासक ने,
राज द्रोह का षड़यन्त्र किया।
छः वर्ष की कड़ी सजा देकर,
जेल माडले अब कैद किया ॥

(८४)

उसने सोचा भूल चलेगा,
भारत इनको दीर्घ काल मे।
दब जायेगा यह आन्दोलन,
शान्ति आयेगी सम्राज में ॥

(८५)

किन्तु यह सपने का ससार,
जिसका था कुछ अस्तित्व नहीं।
प्रभात हुआ तम था टल गया,
छिपा नभ बन रवि प्रताप कहीं॥

(८६)

बज्र परिधि के बन्दी गृह से,
गीता रहस्य यह हिन्द मिला।
कर्म योग का ज्ञान बताकर,
तिलक सुयश जग तल आज खिला॥

(८७)

इस भारत के बाल तिलक को,
यह बंदी-गृह बना बरदान।
जब लिखने यह लगी लेखनी,
रण ज्ञान श्रेष्ट कृष्ण भगवान ॥

(८८)

कृष्ण मंदिर यह बन्दी गृह,
वह कहता था वीर पुजारी।
आराध्य देव का जन्म भवन,
त्याग तपस्या रण ब्रत धारी ॥

(८९)

होगा पूरा जब मेरा ब्रत,
माता बन्धन कट जायेगा।
जय बंशी बजे विश्व मेरी,
आजादी भारत पायेगा ॥

(९०)

जीवन घड़ियाँ काट रहा था,
आत्म संयमी राष्ट्र केसरी।
सुन रहा तन मय समाधि लिये,
गीता बाणी कृष्ण पुजारी ॥

(६१)

निर्वाचित सभापति दोबारा,
थे हुये रास विहारी घोस।
हिन्द कांग्रेस चली लाहौर,
नया लेकर परिवर्तन जोस ॥

(६२)

महा मानव पंडित मालवी,
मदन मोहन वह जगत महान।
अध्यक्ष मंच किये सुशोभित,
गाये भारत बनाकर गान ॥

(६३)

हिन्द संस्कृति के प्रतिक वे,
बर्तमान अतीत के मिश्रण से।
सदा भविष्य का करते निर्माण,
सहज अलौकिक निज प्रतिभा से ॥

(६४)

आत्मसंयमी सुशिक्षित राष्ट्र,
कर सकता है सहज उत्थान।
प्रकाश पाये बीर इतिहास,
अपना वैभव हिन्द संतान ॥

(९५)

जीवन सुशिक्षा पहला काम,
होगा इससे राष्ट्र निर्माण।
यही बनेगा राष्ट्र कल्प तरु,
तब निकलेगा ठोस परिणाम ॥

(९६)

बात बनाने से काम नहीं,
काम किये से हिन्द उत्थान।
इससे बनती सेना होगी,
भूतल जो काम करें महान ॥

(९७)

जन जीवन स्तर ऊँचा होगा,
जाग उठेगा राष्ट्र अभिमान।
आजादी का साधन होगा,
विजयी होगा वही बलिदान ॥

(९८)

था इसी भावना से प्रेरित,
यह विश्व विद्यालय निर्माण।
हिन्दी हिन्दू हिन्द जगाकर,
किये राष्ट्रीय भाव निर्माण ॥

(९९)

इस प्रकार बनी राष्ट्र सेना,
काशी में थी आजादी की।
जो किया स्वतन्त्रता संग्राम,
जूझारू था अंतिम दिन की॥

(१००)

इन्हीं संयमी बलिदानों से,
फल आया आजादी का।
युग युग नव जीवन पायेगा,
पूर्ण निशानी यह काशी का॥

(१०१)

नित नूतन बनता जायेगा,
हिन्दू विद्यालय गौरव का।
मानव कुल जगमग ज्योति यही,
श्रेष्ट अलौकिक पृथ्वी तल का।

(१०२)

छवीसवीं कांग्रेस अध्यक्ष,
का यह सालाना निर्वाचन।
इलाहाबाद बारी आई,
मान्यवर विलियम वेडरर्बन॥

(१०३)

लंका शायर हिन्द काँग्रेस,
संचालक आरम्भिक दिन के।
आजादी पथ थे हेर लिये,
जब आये दुर्दिन भारत के॥

(१०४)

हिन्द हितैषी युग वर मानव,
विशाल हृदय नर कुल परिवार।
डगमग बेड़ा जब फँसता था,
किये संचालित तब पतवार॥

(१०५)

यह स्वदेश आभारी उनका,
दुखित भारत के कर्णाधार।
जिनकी सेवायें आज तलक,
नित नूतन बनती धवल धार॥

(१०६)

भूतल गगन सदा चमक रहा,
मानव कुल धवल कीर्ति महान।
अभिनन्दन करके उनका,
भारत चला करने बलिदान॥

—❀: इगारहवीं ललकार :❀—

❀ छब्बीसवीं काँग्रेस से तीसवीं काँग्रेस तक ❀

❀ का ❀

जागरण-काल तथा होम लीग आन्दोलन का जन्म

❀❀❀

(१)

विजयी हुआ था जब बंग भंग,
जागरूक भारत आन्दोलन।
बढ़ रहा था राष्ट्र शनैः शनैः,
पराजित था अंग्रेजी दमन॥

(२)

इसी पराजय से चिढ़ चिढ़ कर,
बिगड़ रहा था लंका शायर।
प्रति पल यह हिन्द सशंकित था,
होगा निश्चित दमन भयंकर॥

(३)

हुआ छब्बीसवाँ अधिवेशन,
कलकत्ता के अब भव्य नगर में।
मान्यवर सभापति भाषण था,
विख्यात 'विशन नारायण दर' ॥

(४)

युग परिवर्तन संदेश लिये,
आई हिन्द महत्ता कांक्षा।
मानव कुल की नूतन विकासित,
चिर संचित जो आशा इच्छा ॥

(५)

दमन भयंकर संकल्प लिये,
प्रणय करती शासन प्रणाली।
दुखदा स्रोत यही है बनती,
नहीं दया धर्म हृदय खाली ॥

(६)

इस बढ़ते जगते भारत को,
देख न पाता यह शासक दल।
सहानुभूति शून्य बनती,
उसकी देख हमारी हलचल ॥

(७)

मूल यही है सच्चा कारण,
बढ़े जिससे क्षण क्षण संघर्ष।
क्रान्तिकारी सहज परिवर्तन,
रुकता कब उठा जो उत्कर्ष॥

(८)

जन मन की सुशिक्षित चेतना,
लेकर जब राजनैतिक ज्ञान।
बढ़ने लगा पल पल निरंतर,
राज्य क्रान्ति से भरा विज्ञान॥

(९)

मन शासक उदासीन मंदा,
पढ़ने लगा भारत प्रेम का।
बना वही यह युगान्त कारी,
राजनैतिक दुरगति द्वेष का॥

(१०)

अस्थिर परिस्थिति यह बन गई,
नूतन पथ प्रगति निज राष्ट्र की।
किन्तु रुक सकी नहीं सुयोजित,
अरुणोदय के नव प्रकाश की॥

(११)

छोड़ न पाती सरकार अभी,
शासन कठोर वह परम्परा।
जो पड़ गई है अति पुरानी,
निकम्मी दुखद निरंकुश धरा॥

(१२)

स्वार्थ कुत्सित यह आज अपना,
कर रही है रक्षा वह सदा।
पड़ गई है आदत पुरानी,
करती उन्हें विवश सर्वदा॥

(१३)

पहुंच रहे थे आजादी के,
वीर सेनानी निर्भय आज।
बाँकीपुर अधिवेशन करने,
दृढ़ निश्चय श्रेष्ट वार्षिक काज॥

(१४)

हुये अध्यक्ष राय बहादुर,
रंग नाथ नृसिंह मुधोलकर।
अति परिश्रमी जनगण महान,
करते राष्ट्र सेवा निरंतर॥

(१५)

नेता आजादी के सैनिक,
दीवाने थे अपने धुनि के।
निष्काम काम सफल कल्पना,
बनती रहती मन मे उनके॥

(१६)

कर्तव्य धर्म का पथ लेकर,
उन्हों ने बढना सीखा था।
तन मय हो जग भूलें भूलें,
काम बीच ढ़लना सीखा था।।

(१७)

लगन लगी थी पूरी पक्की,
इधर उधर जान न पाये थे।
बन्दनीय युग युग के मेरे,
लाल लाड़ले भारत के थे।।

(१८)

अठाइसवीं कांग्रेस अधिवेशन,
कराची नगर सम्पन्न हुआ।
श्री सैयद मुहम्मद बहादुर,
नबाब सभापति भारत हुआ॥

(१९)

सकुचित संकिर्णता से वे,
अधिकाधिक ऊपर ऊँचे थे।
जाति बाद से ऊपर मानव थे,
सफल राष्ट्रीय वे सेवक थे॥

(२०)

सार गर्वित था सहज भाषण,
यह मानव विवेक तत्वभरा।
एकता सफल हिन्दू मुसलिम,
संदेश मिला यह हरा हरा॥

(२१)

पृष्टि भूमि जो तैयार किया,
एकता बेली लगने लगी।
संकुचित मजहबी बन्धन से,
उठ राष्ट्रीयता बढ़ने लगी॥

(२२)

विभिन्न मजहबी सज्जनों को,
प्रयोगात्मक मिलन ढंग मिला।
सार्वजनिक मुकामों के लिये;
नूतन एकता का बल मिला॥

(२३)

स्वतन्त्रता के समर भूमि में,
चाँदनी के पूर्ण चाँद खिला।
स्वाभिमान लिये तब हिन्द जगा,
निर्भय विजयी आशा ले चला॥

(२४)

आगया मद्रास अधिवेशन,
वर्ष उनतीसवाँ बीत चला।
माननीय भूपेन्द्र नाथ बसु,
यह सभापति पद भारत मिला॥

(२५)

अब दिन वे अतीत बीत गये,
जग मौज उड़ाने वालों के।
उपनवेश बाद मिले जग तल;
सम्राज यूरोप वालों के॥

(२६)

व्यक्ति बहुतों का स्वामी बना,
एक जाती जो शोषक बनी।
जगत चली थी प्रथा किसी दिन,
बनती गई जो पीड़ा घनी॥

(२७)

जगत युद्ध यूरोप में लगी,
जगत शोषक को ठोकर लगा।
अतीत सामन्ती मनो भाव,
जग तल पाने विदाई लगा॥

(२८)

जीवन शक्ति जो विकसित चली,
इधर पश्चिम से बहने लगी।
चली धार तो रुकेगी नहीं,
प्रशान्त लहर तब उठने लगी॥

(२९)

लाठी गोली नौकर शाही,
यही भारत अंग्रेजी राज।
बेड़ी हथकड़ी बन्दी भारत,
रहे लंका शायर सम्राज॥

(३०)

सपने का है संसार यही,
होगा सहसा अब अंत नहीं।
इस नूतन नव जाग्रित युग में,
शोषक का है अब स्थान नहीं॥

(३१)

सभ्यता का है यह अभिषाप,
मानवता के कलक महान।
अन्त करनें का यह संकल्प,
करके अपना सहज वलिदान।।

(३२)

अधिवेशन बम्बई कांग्रेस,
सत्येन्द्र सिंह अध्यक्ष हुये।
प्रस्ताव सभी जो थे अबतक के,
पूरातन नूतन पास हुये।।

(३३)

परामर्श करें मुसलिम लीग,
स्वशासन योजना पूर्ण करें।
संयुक्त बने हिन्द कांग्रेस,
ऐसा सही हम प्रयत्न करें।।

(३४)

महा समिति ने प्रस्ताव किया,
जन कर्मठ प्रवेश द्वार मिला।
गरम नरम दल अब मिलने का,
गौरव महिमा सौभाग्य मिला।।

(३५)

प्रतिनिधि अपना भेज सकेंगे,
हिन्द राजनैतिक राष्ट्र बना।
नवजीवन अभिलाषा लेकर,
यह राष्ट्र व्यापी विधान बना॥

(३६)

जेल माण्डले लौट चुके थे,
वीर सिपाही तिलक भगवान।
व्रत निष्काम काम लेकर,
देने को तैयार बलिदान॥

(३७)

बढ़ रहा था अब राष्ट्रीय दल,
'होमरूल' का था आन्दोलन।
सीना तन कर चलता भारत,
स्वतन्त्रता का यह अभिनन्दन॥

(३८)

चिरनिद्रा में जब आज चले,
वीर गोखले पूज्य महराज।
क्रन्दन करुणा करता भारत,
दुखित हृदय तिलक थे अब आज॥

(३९)

कठिन यातनायें पा पा कर,
जेल माण्डले जो हँसते थे।
वह गीता भूल गया उनका,
दुखित आज सहसा रोते थे ॥

(४०)

देश भक्त सिरमौर गोखले,
अनन्त निद्रा विश्राम लिये।
भारत वर्ष हीरा चमकते,
रत्न थे वे राष्ट्र छोड़ गये ॥

(४१)

कौन सहे यह कैसे वियोग,
कौन भरे निमम हिन्द घाव।
कौन सम्हाले राष्ट्र पतवार,
कौन चलाये अब राष्ट्र नाव ॥

(४२)

कौन बनाये वर्तमान पथ,
कौन करे रण हिन्द निर्माण।
हो जाता मन आज उदविग्न,
सुनकर राष्ट्र नायक निर्वाण ॥

(४३)

राष्ट्र को बल दे अब भगवान,
भरे दुखद घाव हृदय निशान।
दृढ साहस अविचल धैर्य मिले,
छोड़ गये वे जो काम महान॥

(४४)

करके पूरा अब आज जगत,
कर्तव्य करें हिन्द संतान।
आत्मा है उनकी देख रही,
यही सही होगा पिण्डदान॥

(४५)

दल बल अपना गठित किये,
नित करते श्रम तिलक घनघोर।
गली गली जै जै होता था,
दल 'होमलीग' सकरतलसोर॥

(४६)

स्वतन्त्रता है लक्ष हमारा;
'होमरूल' मेरा युद्ध घोष।
राष्ट्रीय दल परिषद सैन्य,
विजयी होगा हिन्द जय घोष॥

(४७)

प्रथम राष्ट्रीय दल थी परिषद,
पूना सम्मेलन सफल हुआ।
तिलक राष्ट्र फौज निराली थी,
रण 'होमरूल' अब पास हुआ ॥

(४८)

सभापति जोसेफ वेप्टिस्टा,
वीर सहयोगी तिलक पाये।
बढ़ चले जोश उनके दूने,
रण थल मे जय घोष सुनाये ॥

(४९)

यह ललकार निराली थी,
सजती सेना थी बलिदानी।
उमड़ रहा था जन बल भारत,
विश्व नही रखता यह शानी ॥

(५०)

कोने कोने लहर अनोखी,
भारत के सहसा दौड़ पड़ी।
आश्चर्य चकित जगत लड़ाई,
जन समूह ऐसा समर लड़ी।

(५१)

तिलक जागरण नूतन युग में,
विजयी थी आवाज उठी।
संयुक्त बने हिन्द कांग्रेस,
विशाल हृदय हिन्द लहर उठी॥

❀ बरहवीं ललकार ❀

संयुक्त काँग्रेस

❀ श्रीमती एनीबिसेन्ट काल ❀

इकतीसवी काँग्रेस से बतीसवी काँग्रेस तक का जागरण

❀ तथा 'होमरूल आन्दोलन का आरम्भ ❀

—❀❀❀—

(१)

राष्ट्र प्रतिज्ञा प्रतिदिन करता,
होगी कब संयुक्त कांग्रेस।
वह शुभ अवसर यह प्राप्त हुआ,
मिल गये दल दोनो कांग्रेस॥

(२)

भारत राष्ट्र बधाई देता,
तिलक ने जब एलान किया।
चलना होगा पुनः कांग्रेस,
महा समिति अग्शिक द्वार दिया।

(३)

घर घर होती थी तैयारी,
चलना होगा नगर लखनऊ।
आज इकतीसवाँ अधिवेशन,
भारतीय कांग्रेस लखनऊ॥

(४)

पदासीन सुशोभित अध्यक्ष,
श्री अम्बिका चरण मुजुमदार।
राष्ट्र मंच शोभा पाते थे,
श्री लोकमान्य तिलक रण वीर॥

(५)

एक साथ बैठे थे नायक,
गरम नरम दल दोनों पायक।
पाखड़े रास विहारी घोस,
सूरेन्द्र नाथ भारत सेवक॥

(६)

बैठी एक तरफ सहयोगी,
थीं श्रीमती एनी बेसेन्ट।
लेकर झंडा यह होमरूल,
सेविका थीं जो भारत राष्ट्र॥

(७)

अरण्डेल सिपाही वाडिया,
भारत सेवक थे 'होमरूल'।
निशिवासर चलते गाते थे,
भारत अन्दोलन 'होमरूल'॥

(८)

मंच दृश्य सहज निराला था,
दर्शक देख न यह थकते थे।
भाग्य उदय है जगत हमारा,
हृदय वचन वे यह कहते थे॥

(९)

मंच देख यह सुन्दर ऐसा,
दृग पलक नहीं अब गिरते थे।
सेवक गान्धी भी बैठे थे,
यह राष्ट्र हृदय अब हँसते थे॥

(१०)

भारत माता हँस हँस कहती,
कट जावेगा बेड़ी बन्धन।
लाल लाडले बीर सपूतों,
का प्यार आरती अभिनन्दन॥

(११)

दे दे नव बल जगन्नियंता,
मेरे इन वीर सपूतों को।
होती मेरी विह्वल छाती,
लख इनके मिलते पग को।।

(१२)

मेरी कोटि कोटि यह अशीश,
जाग चलें मेरे नौनिहाल।
जग फहरे यह विजय पताका,
आदर पावें मम वीर लाल।।

(१३)

दुख के दिन अब बीत चुके,
बल पा जग चले हिन्द लाल।
फल आयेगा आशा बेली,
फूले फूल वसंत के लाल।।

(१४)

तुषार पात दिवस बीत गये,
नव किसलय के दिन हुये लाल।
जग तम बीता, बीती रजनी,
प्रकाश लाली यह लाल लाल।।

(१५)

जग जागरण नव प्रभात मिला,
मानवता का संदेश मिला।
शुभ लक्षण शुभ सम्बाद मिला,
स्वतन्त्रता का आभास मिला।।

(१६)

खुशी मनाती भारत माता,
आजादी सेना सजती थी।
रण करने का संकल्प लिये,
आज यहाँ सहसा जुटती थी।।

(१७)

रणांगन के कुशल सेनानी,
तिलक तप तप दमन चमक उठे।
ज्यों ज्यों दमन चक्र चलता था,
त्यों त्यों स्वाभिमान जाग उठे।।

(१८)

जेल भेजना अब छोड़ दिया,
इस हिन्द वीर सेनानी को।
जमानत शासक बीस हजार,
तलब किया इस हिन्द शेर को।।

(१६)

तोड़ फैसला मजिस्ट्रेट का,
हाई कोर्ट सही न्याय किया।
बढ़ी प्रतिष्ठा जग मान मिला,
भारत हृदय था स्वागत किया॥

(२०)

होम रूल लीग बनी साथी,
सहयोगी जो थी लंका शायर।
सचालिका नेत्री बेसेन्ट,
करती रहती कार्य निरंतर॥

(२१)

आजादी के समर भूमि में,
ऊँचा इनका श्रेष्ट बलिदान।
युग युग गाये भारत गौरव,
स्वर्णांकित है इतिहास महान॥

(२२)

हिन्द हो चुकी थी यह स्थापित,
तिलक होम लीग पूना नगर।
यह आल इन्डिया होम रूल,
लीग बनी अब बेसेन्ट समर॥

(२३)

यह आन्दोलन था समर क्षेत्र,
बढ़ता जाता था होम रूल।
साहस ले जन मन कहता था,
पा लेगा भारत होम रूल।।

(२४)

रंग नया यह कांग्रेस मंच,
जब प्रतिनिधि सब के आज मिले।
कांग्रेस बनी जीवन बेली,
मन वान्छित फल ये हिन्द मिले।।

(२५)

हुये प्रस्ताव पुराने थे,
दिन चर्य्या से जो सम्बन्धित थे।
किन्तु स्वशासन का प्रस्ताव यहाँ,
सर्व प्रिय अधिक मूल्य वान थे।।

(२६)

यह पहला भारत अवसर था,
जब हृदय खुला प्रस्ताव हुआ।
निश्चित करदे लंका शायर,
शासन देना जब मान्य हुआ।।

(२७)

आधीन नहीं भारत नगरी,
ग्रेट बृटेन के साझीदार।
दोनों मिल सम्राज सजायें,
भाई भाई बने सरकार ॥

(२८)

प्रभु दल सेवक दल भेद न हो,
यही स्वशासन माँग हमारी।
विकसित हो जग तल मानवता,
दोनो की हो साझीदारी ॥

(२९)

यह चैन की बंशी बज जावे,
दोनो घर हो दीवाली।
मिल मिल के हम दोनो गायें,
भाई भाई यह कौवाली ॥

(३०)

स्वशासन की जब मेरी मांग,
हुई प्रस्तुत महा अधिवेशन।
हृदय खुला भारत जोश जगा,
जन मन करता था अभिनन्दन ॥

(३१)

चार चाँद लगे थे हिन्द में,
उसी समय सहसा उसी ठौर।
अनुमोदन थी करती लीग,
मुसलिम हृदय करतल मय सोर॥

(३२)

हिन्दू मुसलिम आवाज मिला,
भारत जन मन की माँग बनी।
शासक दल की तब चाल रुकी,
ऐसी थी सुन्दर बात बनी॥

(३३)

भूल गई चालाकी उनकी,
भूल चला था पासा उनका।
भूल गई भारत भेद नीति,
बन्द हुआ शोषक पथ उनका॥



✲ तेरहवीं ललकार ✲

❀ होम रूल आन्दोलन तथा दमन ❀

—:✲ एनीबिसेन्ट तथा तिलक काल ✲:—

बीसवीं कांग्रेस

—✲✲✲—

(१)

ज्यों ज्यों यह बढ़ता जाता था,
होम रूल भारत आन्दोलन।
त्यों त्यों तेजी पाता जाता,
सहसा सरकारी चक्र दमन॥

(२)

सुदूर भारत कोने कोने,
दावानल सहसा लगता था।
आन्दोलन की प्रखर लपट में,
भारत द्रोही अब जलता था॥

(३)

यह ऐसा सुन्दर अवसर था,
जब भूखा भारत बढ़ता था।
आजादी के समर भूमि में,
धैर्य्य भरा यह रण करता था।।

(४)

हिन्दू-मुसलिम भाई भाई,
प्रेम सदा यह बँधता था।
कांग्रेस लीग योजना मिली,
पग पग भारत यह बढ़ता था।।

(५)

शक्ति सहज जन बल भारत की,
नैतिकता चमकी बढ़ती थी।
मानवता के इस रण पथ पर,
निज आजादी रण करती थी।।

(६)

समर भूमि में वीर वेसेन्ट,
निशिवासर अविचल लड़ती थी।
आन्दोलन निर्भय करती थी,
झण्डा अपना लहराती थी।।

(७)

भारत की बलिदानी बेदी,
चूम चूम अभिन्दन करती थी।
लक्ष्मी दुर्गा झाँसी रानी,
पथ उनका याद दिलाती थी॥

(८)

भारत की मदरासी नारी,
निकल पड़ी थी रण छोड़ छोड़।
यह लेकर झण्डा होम रूल,
बन जलूस बन्धन तोड़ तोड़॥

(९)

रण पथ चलती निभर्य निश्चित,
विजयी आशा अपनी लेकर।
यह भारत फौज निराली थी,
नारी बलिदानी अब पाकर॥

(१०)

आन्दोलन कारी यह दैनिक,
न्यू-इन्डिया पत्र कामन बिल।
बीस:हजार नकद आज किया,
जमानत तलब यह शासक दल॥

(११)

जप्त करके प्रगट चोट दिया ;
शासक दल पहला वार किया।
'बेसेन्ट' 'अरण्डेल' 'वाडिया',
नजर बन्द नेता कैद किया।।

(१२)

जन प्रियता अब आन्दोलन की,
प्रति पल इससे बढ़ती जाती।
महिमा रण आन्दोलन कारी,
बढ़ती सेना पग पग चलती।।

(१३)

विद्युति गति पाता आन्दोलन,
दिन दूना यह रात चौगुना।
सहसा भारत बढ़ता जाता,
अभिलाषा से अधिक सौगुना।।

(१४)

मिस्टर माण्टेगु की डायरी,
कहती थी ऐसा बोल बोल।
जो नेता थे शासक दल के,
करती थी बातें खोल खोल।।

(१५)

टुकड़े टुकड़े बावन करके,
पारवती को जब काटा था।
रूठा था स्वामी शङ्कर ने,
ऐसा भीषण क्रोध किया था॥

(१६)

अजब तमासा उसने देखा,
यह पारवती बावन बनती।
सती लोहा अटल मान लिया,
भूलें उनकी उनपर हँसती॥

(१७)

यही हाल थी बेहाल बनी,
लंका शायर शासक दल की।
दमन चक्र था लज्जित हँसता,
सुन सुन के कहानी दमन की॥

(१८)

अब देखा एक नहीं हजार,
यह गली गली वेसेन्ट बनी।
झंडा लेकर यह घूम रही,
आन्दोलन की अवतार बनी॥

(१६)

अपनी करनी से हार गया,
दमन की हाल बेहाल हुई।
आन्दोलन के बढ़ते बल से,
यह बन्दी अब बेकार हुई॥

(२०)

रणांगन में जब होने लगी,
सत्याग्रह की अब तैयारी।
हिन्द संयुक्त कौन्शिल बैठी,
करती आदेश पत्र जारी॥

(२१)

महासमिति मुसलिमलीग मिली,
कोने कोने संदेश पठाती।
नजर बन्द कैद मुक्त करना,
सत्याग्रह की देती पाती॥

(२२)

निज शाखा प्रान्तीय कमेटी,
जनमत भेजें कर तैयारी।
गिनती होती जनमत भारत,
मत बढ़ता आन्दोलन कारी॥

(२३)

बीर मौलाना अबुल कलाम,
अली भाई नजर बन्द सभी।
होम रूल आन्दोलन कारी,
मुक्त हों प्रस्ताव पास अभी॥

(२४)

संयुक्त कमेटी की बैठक,
मांग स्वशासन दुहराती थी।
संयुक्त योजना हिन्द बनी,
मिली कदम आगे रखती थी॥

(२५)

सम्राट सरकार यह कहदे,
कम सुधार की अवधि बतादे।
स्वशासन प्रणाली कब देगी,
यह खुली बात आज बता दें॥

(२६)

करके दमन नीति त्याग आज,
भाई भाई सम्बन्ध बने।
अब प्रेम भाव विश्वास बढ़े,
सम्राट सरकार नीति बने॥

(२७)

इस निश्चय में था जोश भरा,
दिल का नूतन अरमान भरा।
कुछ करने का दृढ़ संकल्प भरा,
हुंकार भरा ललकार भरा॥

(२८)

नर-कुल अपना अभिमान भरा,
रण थल पावन बलिदान भरा।
नूतन जीवन स्वप्न प्रभात भरा,
आजादी का था भाव भरा॥

(२९)

निश्चय था आन्दोलन कारी,
उमड़ रहाथा जन बल भारत का।
सत्याग्रह की होती तैयारी,
परिवर्तन था राज नीति का॥

(३०)

जाग उठा था नगर मद्रास,
प्रतिज्ञा पत्र बना तैयार।
जीवन की बाजी अब देकर,
करते थे सैनिक हस्ताक्षर॥

(३१)

प्रथम सत्याग्रही हस्ताक्षर,
था सर एस० सुब्रह्मण्य ऐयर।
द्वितीय था हिन्दू सम्पादक,
कस्तूरी रंगा आयंगर॥

(३२)

हस्ताक्षर की थी होड़ लगी,
कौन प्रथम कितना बीर बने।
किसका हो अब बलिदान प्रथम,
सैनिक थे रण बाना पहिने॥

(३३)

सरकारी शासक दल देखा,
काम बिगड़ता अब जाता है।
दमन नीति निकम्मी यह होती,
काम नहीं इससे कुछ बनता है॥

(३४)

लंका शायर से भेज दिया,
मिस्टर माराटेगु की घोषणा।
सुधार वादी हिन्द खरीता,
आकर्षक थी बनी घोषणा॥

(३५)

बीस अगस्त सन् सतरह हुई,
घोषणा थी यह भारतवर्ष।
शासन उत्तरदायी अपना,
स्वागत होता था हृदय हर्ष॥

(३६)

बंदी सारे अब मुक्त हुये,
घर घर बजती थी सहनाई।
जन मन था यह स्वागत करता,
मिलते थे हम भाई भाई॥

(३७)

स्थगित था भारत सत्याग्रह,
सुनकर नूतन शासन वाणी।
यद्यपि विश्वास न होता था,
फिर भी रुकती थी रण वाणी॥

(३८)

अवधि नहीं कुछ भी निश्चित थी,
खटक हृदय शंका बनती थी।
क्रमिक मिलेगा हिन्द अधिकार,
रण बल से बनती आशा थी॥

(३९)

यह आन्शिक विजय हमारी थी,
बल नैतिक गौरव बढ़ता था।
स्वीकार हमें था बस इससे,
पथ आजादी का मिलता था॥

(४०)

था राजनैतिक गगन विहान,
स्वर्ण मयी जगतल लोहित था।
जग जागरण नूतन संदेश,
सूर्य स्वर्णिम रश्मि तनता था॥

(४१)

प्रतिभा के मिले प्रकाशों से,
रण पथ आलोकित होता था।
तम टलता सहसा जग तल से,
भारत द्रोही अब छिपता था॥

(४२)

मुसलिम लिग भारत कांग्रेस,
मिली बधाई शासक दल को।
स्वागत वाणी भारत कहता,
ठेस न हो मेरे गौरव को॥

(४३)

तत्कालिक मिले कम अधिकार,
शासक वाणी यह सिद्ध बने।
मिटे कलंक बन्धन अभिशाप,
पथ मेरा राष्ट्र विकास बने॥

(४४)

दिन कितने जीवन बीत गये,
प्रथम किस्त के अधिकार मिले।
प्रयोगात्मक कार्य आज करें,
जिससे आगे विश्वास चले॥

(४५)

उदय हुआ था नया सितारा,
राजनैतिक गगन चमक रहा।
नया नेतृत्व अपना लेकर,
अजब जादू चमत्कार रहा॥

(४६)

होम रूल भारत आन्दोलन,
गगन शिखर जब चूम रहा था।
तब गोरे जमीनदारों से,
यह लोहा विकट ले रहा था॥

(४७)

होम रूल छोड़ यह षट मास,
दीन किसानों में घूम रहे।
वह शिकायती राग अलापते,
साथ में थे उनके गा रहे॥

(४८)

जिसकी शक्ति का प्रथम परिचय,
चम्पारन में पा रहा राष्ट्र था।
वही महा मानव आज यहां,
किसानों बीच भूल गया था॥

(४९)

सच्चे थे सहयोगी साथी,
बीर अनुग्रह बाबू साथ।
देव मूर्ति राजेन्द्र प्रसाद,
आचार्य कृपलानी भी साथ॥

(५०)

गोरख बाबू बृज किशोर जी,
डाक्टर देव को संग लेकर।
दुख दर्द भरी उनकी बातें सुनता,
प्रेम अहिंसा देता घर घर॥

(५१)

थे वही पूज्य बापू गांधी,
राज नैतिक शैशव काल था।
काट सकेगा बन्धन बापू,
यह किसको जगत में ज्ञात था॥

(५२)

सरल सलाह दिये थे बापू,
जाग गया हिन्द सारा देश।
राष्ट्र भाषाओं में अनुवाद,
कर घर घर दें राष्ट्र संदेश॥

(५३)

अंग्रेजी न बोले प्रस्ताव,
हो सकती क्यों भारत भाषा।
बाहर जैसे भी काम बने,
घर बात करे घर की भाषा॥

(५४)

चम्पारन से लौटे थे बापू,
कांग्रेस चली झोपड़ियों मे।
राष्ट्र व्यापी प्रथम अवसर था,
जीवन था दीन किसानो में॥

(५५)

यह था जादू मंत्र [illegible],
दस लाख हो गये [illegible]।
घर घर फैल गया [illegible],
उठ गया राज नैतिक [illegible] [illegible]॥

(५६)

छतीसवीं थी हिन्द कांग्रेस,
कलकत्ता था यह अधिवेशन।
सभा नेत्री थी जब वेसेन्ट,
कभी न था ऐसा अभिनन्दन॥

(५७)

रह न सकी कांग्रेस [illegible],
प्रस्तावों का केवल मेला।
अब की परम्परा [illegible] [illegible],
वीराँगना की अमर [illegible]॥

(५८)

बदला हिन्द यह बदली चाल,
थी बदली सभी पुरानी बात।
अनुनय रहा न विनय निवेदन,
अधिकारिक थी अब पूर्ण बात॥

(५६)

जन्म सिद्ध अधिकार हमारा,
आज था यह चरितार्थ हुआ।
यहाँ हिन्द शुभ अवसर था,
जब निश्चित दृढ़ प्रतिकार हुआ॥

(६०)

हिन्द के अब इस रणांगन में,
बीर वेसेन्ट ने ललकार दिया।
स्वशासन अधिकार हमारा,
आज कर्तव्य पुकार दिया॥

(६१)

सजकर आई पूरा करने,
संघर्ष भरा नारा मेरा।
मानवता की प्रबल ललकार,
अरमान हिन्द होगा पूरा॥

(६२)

इसे रोक न सकेगा कोई,
झण्डा ऊँचा होगा मेरा।
सच्चा जीवन सच्ची बोली,
पावन है संघर्ष हमारा॥

(६३)

इसमें जीवन ललकार भरा,
मानवता का अरमान भरा।
जन गण मन का उल्लास भरा,
जगतल का नव उत्थान भरा॥

(६४)

भारत माँ की बन्धन बेड़ी,
कटने का अंत महान भरा।
लंका शायर गौरव महिमा,
बढ़ने का जगत विकास भरा॥

(६५)

शासन की समान सभा में,
श्रेष्ट विधेयक आगे [illegible]।
स्वशासन हो, [illegible] [illegible],
विकसित भारत जगतल [illegible]॥

(६६)

अवधि सुनिश्चित शासन सत्ता,
शक्ति हस्तान्तरण करने की।
अधिकाधिक पांच या दस साल,
उम्र बने इस परिवर्तन की॥

(६७)

प्रगति भरी यह आवाज प्रथम,
गूंज रही थी इस जगतल में।
जगतल अनुमोदन करता था,
वीर वीरांगना वाणी में॥

(६८)

हिन्द प्रतिनिधि थे चार हजार,
नौ सौ सरसठ अधिवेशन में।
अब तक का इतिहास बताता,
आ न सके किसी कांग्रेस में।

(६९)

यह श्रम बल था, यह गौरव था,
यह निष्ठा थी, लगन प्रबल थी।
यह कौशल था, हिन्द प्रेम था,
सूझ बूझ श्रेष्ट वेसेन्ट थी॥

(७०)

हिन्द संघर्ष पट खोल दिया,
रणांगन सहज ललकार दिया।
जिसने भूला पथ खोज लिया,
राजनीति भारत मोड़ दिया॥

(७१)

श्री दादा भाई नौरोजी,
पितामह शोक प्रस्ताव हुये।
फिर भारत के दैनिक जीवन के,
प्रस्ताव सभी थे पास हुये॥

(७२)

था स्वागत प्रस्ताव मारण्टगु,
राज भक्ति मय हिन्द सम्राट।
मिले कमीशन चन्द अधिकार,
बधाई देता भारत राष्ट्र॥

(७३)

प्रेसएक्ट आर्मएक्ट संशोधन,
भाषा वार बने हिन्द प्रान्त।
मानव अभिशाप दुष्कर्म कलंक,
कुली प्रथा का हो आज अन्त॥

(७४)

मानव कुल समता व्यवहार,
निश्चय रुके यह अत्याचार।
भाई भाई में भेद न हो,
समता उचित समाज सत्कार॥

(७५)

दस दिसम्बर हुआ नियुक्त था,
रौलट कमीशन सरकार से।
खुली हुई थी अभय ललकार,
विरोध था कांग्रेस मंच से ॥

(७६)

तीखा होगा दमन औजार,
हिन्द सुधारों की बात नहीं।
पक्ष विरोधी की बुद्धी चाल,
आजादी की थी बात नहीं ॥

(७७)

मुख्य प्रस्ताव राजनीति का,
करतल ध्वनि से था पास हुआ।
संतोष प्रगट हिन्द कांग्रेस,
कृतज्ञता सहज प्रकाश किया ॥

(७८)

भारत मंत्री ने घोष किया,
है पावन उदेश्य हमारा।
उत्तरदायी शासन देना,
हिन्द स्वशासन अपना सारा ॥

(७६)

जोर दार है मांग हमारी,
कॉंग्रेस मंच प्रस्ताव बने।
पार्लमेन्टरी कानून बने,
स्वशासन प्रदान विधान बने ॥

(८०)

अध्यक्ष यह बेसेन्ट भाषण,
पुनः प्रस्ताव में बदल गया।
अन्तर न रहा संशोधन कुछ,
स्वर ऐसा एक सा मिल गया ॥

(८१)

राष्ट्र ध्वज करने को निर्माण,
प्रथम समिति बनी थी जो आज।
अवसर मिल न सका जब उसको,
करना नियोजित पूरा काज ॥

(८२)

बन चुका था तिरंगा प्यारा,
जन प्रिय बेसेन्ट के हाथ में।
हिन्द होमरूल लीग झण्डा,
बन गया जन निशान राष्ट्रमें ॥

(८३)

अपने उस गौरव गरिमा से,
पा गया राष्ट्र ध्वज स्थान यही।
त्याग तपस्या श्रेष्ट बलिदान,
चमक गया सहसा आज वही॥

(८४)

राष्ट्र शिखर पर लहराता है,
बन राष्ट्र श्रेष्ट निशान महान।
युग युग का है अंकित इसमें,
भारत सपूतों का बलिदान॥

(८५)

लाल रंग था जो अब इसका,
पहिन लिया केशरिया बाना।
चरखा अंकित होकर इसमें,
वह प्यारा राष्ट्र प्रतीक बना॥

(८६)

रण आजादी भारत लड़ता,
था इसकी प्यारी छाया में।
भारत की यह सच्ची आत्मा,
प्रति बिम्बित इसकी काया में॥

(८७)

युग युग का है मान हमारा,
तिरङ्गा प्यारा राष्ट्र निशान ।
प्रात बिम्बित बलिदान हमारा,
अङ्कित राष्ट्र इतिहास महान् ॥

(८८)

होमकुल रण लेकर आया,
मानवता का प्रतीक महान् ।
प्रेम बन्धुत्व देता शिक्षा,
जीवन जगत का सच्चा ज्ञान ।
युग युग का मान हमारा,
तिरङ्गा प्यारा राष्ट्र निशान ॥

(८९)

कभी न पाये जगत अपमान,
जाये भले ही मेरी जान ।
जग तल छाया में हम इसके,
बढ़ते चले करते बलिदान ।
युग युग का मान हमारा ,
तिरङ्गा प्यारा राष्ट्र निशान ॥

(६०)

गुण गौरव जग गायें इसका,
निरन्तर हम भारत सन्तान।
रवि शशि ग्रह भूतल हो जब तक,
नेक न झुके इसकी कुछ आन।
युग युग का है मान हमारा,
तिरङ्गा प्यारा राष्ट्र निशान।।

(६१)

यही रण आजादी की शान,
हृदय का यह मेरा अरमान।
जन जीवन भारत का यह प्रान,
तन मन धन इसे है कुर्बान।
युग युग का है मान हमारा,
तिरङ्गा प्यारा राष्ट्र निशान।।

(६२)

यही रही अभिलाषा मेरी,
नित गायें राष्ट्र गौरव गान।
मानवता की यही पुकार,
नित बढ़े भारत राष्ट्र निशान।
युग युग का है मान हमारा,
तिरङ्गा प्यारा राष्ट्र निशान।।

(९३)

मानव हृदय करता जयकार,
गौरव जीवन हमारी जान ।
कोटि कोटि मेरा नमस्कार,
चमके यह हिन्द राष्ट्र निशान ।
युग युग का यह मान हमारा
तिरङ्गा प्यारा राष्ट्र निशान ॥

(९४)

लो मेरे हिन्द राष्ट्र निशान,
मेरा प्रणाम मेरा प्रणाम ।
जीवन प्रतीक राष्ट्र उत्थान,
मेरा प्रणाम मेरा प्रणाम ।
युग युग का है मान हमारा,
तिरङ्गा प्यारा राष्ट्र निशान ॥

(९५)

करके यह झण्डा अभिवादन,
चली सेना करती ललकार ।
चलती करती नहीं विश्राम,
सहसा करती जाती हुंकार ॥

आदिकाल समाप्त क्रमशः पद्य की ४०००० पंक्तियां

दूसरा खण्डः—"गान्धी युग का उदय काल"

रौलट एक्ट का विरोध, जलियां वाला बाग तथा
असहयोग आन्दोलन की बलिदानी कथायें छप रही हैं ।

गान्धी युग का उदय काल

....

पाठक वृन्द,

"भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम" केवल भारत को ही नहीं ब
सम्पूर्ण जगत की स्वतन्त्रता को अमरत्व देनेवाला मानव समाज का कल्याणव इतिहास तथा सम्पूर्ण मानवता को सुख शान्ति देनेवाला त्याग तपेस्या वलिदानी सत्य मार्ग है ।

इस सम्पूर्ण महाकाव्य को १२ बारह खंडो मे आपकी सेवा में पद्य ४०००० पंक्तियो द्वारा समर्पित करने का निश्चय किया गया है । जिसमे खंड १८५७ की जनक्रान्ति तथा शेष १० खंड सन् १८८५ से १९४७ तक का संग्राम है, जो क्रमशः प्रकाशित हो रहा है ।

यह खंड यानी आदिकाल (उत्तरार्ध) सन् १८८५ से १९१७ तक का संग्राम है । इसके बाद आप की सेवा मे **"गान्धी युग का उ काल"** समर्पित किया जावेगा जिसका प्रकाशन **"स्वतन्त्रता-संग्राम-साहि सदन"** के तत्वधान मे **पञ्चातत प्रेस द्वारा** आरम्भ हो गया है ।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के किसी खंड को यदि आपने प्राप्त लिया है तो शेष खंडो के लिये आप 'स्वतन्त्रता संग्राम साहित्य सदन' गाजी को लिखिये !

यदि आप १) भेजकर अपना नाम ग्राहक रजिस्टर में अंकित करा तो क्रमशः वी० पी० द्वारा आपकी सेवा मे प्रकाशित होते ही हर खंड पहुं जायेगा । और यह आप का १) जिस वी० पी० के साथ चाहेंगे दे दि जावेगा ।

स्वतन्त्रता संग्राम साहित्य सदन
लालदरवाजा गाजीपुर
उत्तर प्रदेश

२ अक्टूबर १९५७

कवि का परिचय

कवि स्वतन्त्रता संग्राम का एक सफल सैनिक है। जिसने आजीवन देश सेवा का व्रत ले रखा है। आप के माता पिता आप को सूर्य्य नारायण तथा बोध दत्त के नाम से पुकारते थे। आपने रसिक तथा प्रज्ञ नाम से कुछ कविता लिखा है। किन्तु स्वाभाविक आप स्वयं लिखते हैं।

सूर्य्य नाम माता धरी, पितु रख बोध महान्।
रसिक नाम साथिन धरे, धरे प्रज्ञ गुरु जान॥
चार नाम ये मोहिं न भावे, नीच अधम मैं खान।
अस विचार नीको लगे, नाम 'अज्ञ' अनजान॥

संक्षेप मे यह परिचय काफी होगा। आप का जन्म गाजीपुर जिले के करसाही ग्राम मे श्री रामबरन पान्डेय जी के घर हुआ है। नमक सत्याग्रह आन्दोलन मे आपने स्कूल का त्याग किया था। अंग्रेजी काल में जब आप हाई स्कूल मे राजनीतिक अभियोग में निसकाशित कर दिये गये, तो हिन्दी विद्यापीठ प्रयाग में पढ़ते रहे। आप अपने विद्यार्थी जीवन से ही स्वतन्त्रता संग्राम मे सक्रीय भाग लेते रहे और कईबार जेल यात्रा भी किये। आप ने अबतक दर्जनों पुस्तकें लिख डाली है; किन्तु अभी तक अर्थाभाव के कारण उनका प्रकाशन नहीं हो पाता है। जिसमे 'शरीर बन्दी' सामाजिक क्रान्ति, सत्य सन्देश, पथिक का पथ, मानवी विज्ञान "जगत नियन्ता के नाम पत्र" को आपने अगस्त क्रान्ति के अवसर पर जिला जेल गाजीपुर में लिखा था। बाल काल मे ये श्री युगल जोड़ी जी के यहां साहित्य का अध्ययन करने जाया करते थे इनकी बुद्धि को देख कर युगल जोड़ी जी ने इनका नाम प्रज्ञ रक्खा। हिन्दी साहित्य की सेवा करते हुये आज भी अपना सारा समय किसान मजदूरों की सेवा में बिताते

हैं। आप के रग रग में साहस तथा धैर्य की ज्योति मिलती है, आगे चलकर आपकी सेवा पूर्ण होगी तथा पूर्ण सफलता मिलेगी। आप अपने विचारों की स्वतन्त्रता तथा निर्भीकता के लिये प्रसिद्ध हैं। आप का दृष्टिकोण राष्ट्रीय समाजवादी तथा विश्व है बन्धुत्व । इसे ही अपना अन्तिम लक्ष मानते हैं। यह महा काव्य यानी भारती स्वतन्त्रता-संग्राम जो पद्य की ४०००० पक्तियों में लिखी जा चुकी है। जिसका कुछ हिस्सा अभी शेष है। कवि अपने गिरते हुये स्वास्थ्य के कारण इस महा काव्य को अपने जीवन की अन्तिम काव्य कहता है।

कवि की महान इच्छा है जिसे स्वय कहा करता है, कि *"यदि मरने से पहले मैं इस महाकाव्य को प्रकाशित देख पाता तो मै अपने को सफल समझता।"* मेरे जीवन का लक्ष था भारत को स्वतन्त्र बनाना जिसे हमने १५ अगस्त सन् १९४७ को साकार देखा। यह काव्य उसी की अनुभूतिया है। यदि इन्हे अपने जीवन मे पुस्तकों के रूप मे साकार होते देख पाता तो अपने जीवन को पूर्ण मान कर ससार से बिदा होने मे महान सुख का अनुभव करता।

यद्यपि यह पुस्तक लगभग पूर्णत. लिखी जा चुकी है, जो प्रेसमे वर्तमान है किन्तु अर्थाभाव के कारण समुचित ढंग से प्रकाशन मे महान् बाधा उपस्थित होती रहती है। भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है इसे कौन बतावे।

इस पुस्तक में सन् ३० तथा सन् ४२ का संग्राम बो महान् आकर्षक ढ़ग से लिखा गया है। बहुतेरे मित्रो का कहना है, कि पहले यही खंड प्रकाशित हो, किन्तु प्रकाशन क्रमशः चल रहा है। सम्भव सहयोग के लिये निवेदन है।

स्वतन्त्रता संग्राम साहित्य सदन गाजीपुर